सरल संस्कृतम्

संस्कृतं देवभाषा यन्न भभार न जीर्यति



प्रयागदत्त चतुर्वेदी

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्, लखनऊ

सरल संस्कृतम्
(Sanskrit in 40 days)

लेखक
प्रयागदत्त चतुर्वेदी



उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ

प्रकाशक :

सुनीता चतुर्वेदी

आई.ए.एस.

निदेशक :

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

लखनऊ

मूल्यम् : ६५.०० रूप्यकाणि

प्रथम संस्करण-१९८२

द्वितीय संस्करण-२०११

प्राप्तिस्थानम्

विक्रय-विभाग :

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

संस्कृत भवनम्, नया हैदराबाद, लखनऊ - 226 007

फोन : 2780251 फैक्स : 91522 - 2781352

वेबसाइट : upsanskritsansthanam.org

मुद्रक : **शिवम् आर्ट्स,** निशातगंज, लखनऊ।

दूरभाष : 2782348, 2782172

आत्मकथ्यम्

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा" भारतदेशस्य प्रतिष्ठा निखिलभूमण्डले वर्तते। प्रतिष्ठायाः कारणं संस्कृतभाषा तथा भारतीयासंस्कृतिश्च अस्ति। संस्कृत भाषा सम्बन्धे भारतीयसंस्कृति सम्बन्धे च अयं देशः विश्वास्मिन् विश्वे अग्रगण्यः अस्ति। एते द्वे प्रतिस्ठे मानवानामपेक्षया देवानपि अत्र जन्मग्रहणाय प्रेरयतः। यतः इतः स्वर्गास्यापवर्गस्यच प्राप्तिर्भवितुं शक्नोति।

स्वर्गापवर्गमार्गप्राप्तेः विधानम् संस्कृत वांगमये एव प्रतिपादितमस्ति। तन्वांगमयं दुस्तरणीय सागरोपमस्ति। अज्ञानिनां कृते तद्दुस्तरणीयमेवास्ति। तदर्थं ज्ञानप्राप्तिरावश्यकी अस्ति। ज्ञानाय संस्कृत भाषाया अध्ययनमावश्यकमस्ति। संस्कृत भाषायां लिखिताः ग्रन्थाः सर्वेषां कृते न सुगमतया बोध्याः सन्ति एतदर्थं संस्कृत भाषायां सरलतम विधिना यथाबोधस्यात्। एतदर्थमुत्तर-प्रदेशसंस्कृतसंस्थानम् सरलतम संस्कृतग्रन्थानां विद्वद्भिः प्रणयनं कारयित्वा तेषां ग्रन्थानाम् प्रकाशनंकरोति। जनमानसानां हृदयतः संस्कृत भाषा दुरूहा कठिना चास्ति इति भावनां दूरी कर्तुमुत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थानम् प्रयासरतं विद्यते।

संस्कृतभाषाया प्रचाराय प्रसाराय चेदं संस्थानम् संस्कृत सम्भाषणशिविरापि चालयति। शिविरेषु संस्कृतभाषानुरागिणः आगत्य संस्कृतं पठन्ति। संस्कृत-भाषासम्भाषणस्य चाभ्यासं कुर्वन्ति संभाषणेन च संस्कृत धार्मिका अनेन संस्कृताध्यनेन संस्कृत ध्यात्मिकान् ग्रन्थानाधीत्य संस्कृतवांगमयगतं ज्ञानं प्राप्नुवन्ति स्वर्गापवर्गं मार्गे प्राप्तेः विधिंचावगच्छन्ति।

वस्तुतः संस्कृतं विना मानवजीवनमपूर्णमिवाभाति। यतः तत्र सर्वज्ञानंविद्यते। यथा धर्मशास्त्रं, नीतिशास्त्रं, विधिशास्त्रं, षड्दर्शनम्, पुराणानि, गीता उपनिषदश्च वर्तन्ते। एकमपि शास्त्रमधीत्य स्वजन्मसफलीकर्तुं शक्नोति मानवः।

उत्तर प्रदेश सर्वकारास्यार्थिकानुदानेन संस्थानम् प्रचलति। संस्थानस्य मुख्यं लक्ष्यमस्ति सरलतम माध्यमेन संस्कृत भाषायाःशिक्षणं स्यात्। शिक्षण

माध्यमेन जनाः संस्कृत भाषायाः ज्ञानं प्राप्य संस्कृत भाषाया उन्नयने उद्यताः भवन्तु।

संस्कृत भाषा अत्यन्तं सरला ललिता चास्ति। अनेनैव सह संमृद्धाचास्ति विश्वप्रसिद्ध दार्शनिकः संस्कृतवेत्ता ''मैक्समूलर'' कथितवान् यत् यदि कश्चन पाश्चात्यदृष्टिकोणे मां पृच्छति यत् मानवस्य विश्वेतिहासे ऊनविंशतिशताब्द्धाः प्रमुखान्वेषकस्य उपलब्धिः कातदाहं कथयिष्यामि यत् ''संस्कृतमस्ति''।

श्री प्रयागदत्त चतुर्वेदिमहोदयाः सरलसंस्कृतम् इति ग्रन्थं निर्माय सरलतममाध्यमेन संस्कृत शिक्षणस्य यः प्रयासः कृतवान्। एतदर्थते धन्यवादर्हा सन्ति तान् प्रति अहं भूरिशः प्रणतितति समर्पयामि।

रेखा वाजपेई

अध्यक्षः

प्रकाशकीय

आदिकाल से संस्कृत भाषा एवं साहित्य का राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज भी संस्कृत भाषा की प्रासंगिकता उतनी ही है जितनी पहले थी। आज के युग में वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत भाषा सबसे उपयुक्त भाषा है।

उ.प्र. संस्कृत संस्थान द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किये जाते है। जिसमें सरल संस्कृत प्रशिक्षण शिविरों का अपना अलग ही स्थान है। सरल संस्कृत प्रशिक्षण शिविरों में सभी वर्ग के प्रशिक्षुओं की भागीदारी होती है, जो इसकी लोकप्रियता को प्रदर्शित करती है। प्रशिक्षण शिविर के पाठ्यक्रम पर आधारित यह ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण है जो संस्कृत भाषा सीखने के इच्छुक प्रशिक्षार्थियों का पथ प्रदर्शक होगा।

इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के लिए संस्थान की अध्यक्ष मा. डॉ. रेखा बाजपेई की प्रेरणा के लिए संस्थान आभारी है। ग्रन्थ के लेखक डॉ. प्रयाग दत्त चतुर्वेदी जी को अत्यन्त धन्यवाद देती हूँ। ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग के लिए डॉ. चन्द्रकला शाक्य, सर्वेक्षक, संस्कृत संस्थान के सभी कर्मचारियों तथा प्रकाशन के लिए शिवम् आर्ट्स को धन्यवाद देती हूँ।

अक्षय तृतीया वि.स. २०६८
६ मई २०११

सुनीता चतुर्वेदी
आई.ए.एस.
निदेशक
उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ

शुभाशंसा

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली-
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ॥

विश्व-साहित्य में ऋग्वेद प्राचीनतम ग्रन्थ है। वेदों की रचना संस्कृत भाषा में हुई है। आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों ने भी भाषाशास्त्र की दृष्टि से संस्कृत को सभी भाषाओं में प्राचीन माना हैं। समस्त भारत की आञ्चलिक भाषाओं का भी उत्स संस्कृत ही है अतः प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों का प्रयोग मिलता है। यहाँ तक कि उर्दू भाषा में भी संस्कृत शब्द प्रयुक्त होते हैं।

संस्कृत के इस व्यापक स्वरूप को ध्यान में रखकर प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रणयन किया गया है, जिसमें संस्कृत को सरलता से सीखने की प्रक्रिया बताई गई है। इसकी प्रस्तावना में लेखक ने अंग्रेजी के कठिन शब्दों के ऐसे सरल और शीघ्र बोधगम्य संस्कृत पर्याय दिए हैं, जिनसे संस्कृत की सर्व-गम्यता स्पष्ट होती है। कोमलमति छात्रों के लिए संस्कृत में सरल ग्रन्थ-लेखन का यह प्रयास श्लाघनीय है। ग्रन्थ के लेखक श्रीप्रयागदत्त चतुर्वेदी बधाई के पात्र हैं, जिनका यह प्रयत्न संस्कृत के प्रचार-प्रसार में अत्यन्त उपादेय है।

आशा है यह ग्रन्थ लघुकलेवर होकर भी संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में विशेष सहायक होगा।

गंगादशहरा
वि० सं० २०५२
वाराणसी

पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय
अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
लखनऊ

प्रस्तावना

जनसाधारण में सामान्य धारणा व्याप्त है कि संस्कृत कठिन, दुरूह और शुष्क भाषा है जो केवल पंडितों और कर्मकाण्डियों के उपयोग की है। वास्तविकता यह है कि संस्कृत एक अतीव सरल और ललित भाषा है और इसमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म, गहनातिगहन और ललितातिललित भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने की अपूर्व क्षमता है। संस्कृत का व्याकरण बिल्कुल वैज्ञानिक है और संस्कृत में वाक्य-रचना अंग्रेजी आदि भाषाओं की अपेक्षा सरल है जिसमें स्खलन (गलती) की संभावनायें कम हैं। उदाहरणार्थ यदि अंग्रेजी में आपको कहना है कि केशव ने सांप को डंडे से मार डाला तो कहेंगे Keshav Killed the Snake by a Stick इस वाक्य में शब्दों के स्थान में रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता और यदि कहेंगे तो बड़े विपरीत और उलटे अर्थ निकलेंगे। उदाहरणार्थ, आप नहीं कह सकते (Snake Killed Keshav by a stick, A Stick Killed Keshav Snake) पर संस्कृत में केशवः सर्पं लगुडेन हतवान् को आप किसी तरह उलट-पुलट कर कहें, सर्पं केशवः लुगडेन हतवान् अथवा हतवान् लगुडेन केशवः सर्पम्। सभी शुद्ध हैं और मूल अर्थ में कोई परिवर्तन न होगा।

पुनश्च अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के सीखने में जितना श्रम और अभ्यास निहित है, उससे कहीं कम परिश्रम और कठिनाई से संस्कृत सीखी जा सकती है। अंग्रेजी भाषा में शब्दों की वर्तनी (Spelling) और सही उच्चारण विद्यार्थी को निरंतर परेशान करते रहते हैं और १०/१५ वर्षों तक पढ़नेके उपरान्त भी विद्यार्थी का इन पर अधिकार नहीं हो पाता। संस्कृत भाषा में वर्तनी (Spelling) और उच्चारण में गलती की संभावना नहीं है। जो लिखा जायगा बिल्कुल वही उच्चरित किया जायेगा अर्थात् बोला जायेगा और जो बोला जायेगा, अक्षरशः वही लिखा जायेगा।

नीचे अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्द उद्धृत हैं जिनकी वर्णयोजना (Spelling) और उच्चारण भारतीय विद्यार्थियों के लिए कष्टसाध्य है। बी० ए० और एम० ए० के विद्यार्थी भी इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते और न उन्हें सही लिख पाते हैं। आप देखें कि उसी आशय को अभिव्यक्त करने वाले संस्कृत शब्द कितने सरल और सुबोध हैं—

1. Consequence	परिणाम, फल
2. Incongruous	असङ्गत, अननुरूप
3. Confluence	सङ्गम
4. Catastrophe	आपद्
5. Catarrh	श्लेष्मा, कफ
6. Blasphemy	ईश्वर-निन्दा
7. Benevolence	उदारता, परहितैषणा
8. Benediction	आशीष
9. Quinquennial	पञ्चवार्षिक
10. Quintessence	सार, विशुद्धतम स्वरूप
11. Contumacious	धृष्ट, दुर्विनीत
12. Contiguity	सामीप्य,
13. Drought	अनावृष्टि
14. Draughtsman	लेखक, चित्रकार
15. Etiquette	आचार, शिष्टाचार
16. Equivocal	द्वन्द्वार्थक, अस्पष्ट
17. Facsimile	प्रतिरूप, प्रतिलिपि
18. Ferocious	रौद्र, दारुण
19. Fluctuating	लोल, चञ्चल, दोलायमान
20. Incogni o	प्रच्छन्नरूपेण
21. Inquistive	जिज्ञासु, कुतूहली
22. Invulnerable	अभेद्य
23. Incombustible	अदाह्य
24. Fictitious	कल्पित, असत्य
25. Assiduous	उद्यमी, उद्योगी
26. Perseverence	अध्यवसाय
27. Peraspicacity	सूक्ष्मदृष्टि
28. Perpetual	शाश्वत, नित्य
29. Pedestrian	पदाति
30. Resplendent	देदीप्यमान
31. Rendezuous	संकेतस्थल, समागमस्थल
32. Renaissance	नवजागरण
33. Sagacious	विदग्ध, चतुर

34. Paraphernalia	परिच्छद, उपकरण
35. Psychology	मनोविज्ञान
36. Metamorphosis	रूपान्तर, परिवृत्ति
37. Pseudonymous	छद्मनामा
38. Hideous	बीभत्स
39. Homogeneous	सजाति, सधर्मी
40. Haemorrhage	रक्तस्राव
41. Hypocrite	दम्भी, मिथ्याचारः
42. Hereditary	पैतृक
43. Occult	गूढ़
44. Unparallelled	अनन्य, अप्रतिम
45. Paramour	जार
46. Irreproachable	अनिन्द्य
47. Irrepressible	अदम्य, दुर्निग्रह
48. Hallucination	व्यामोह
49. Odious	गर्हित, कुत्सित
50. Pedigree	वंशावली
51. Chivalrous	शौर्यपूर्ण
52. Impeccable	निष्कलंक
53. Iuexorable	अप्रसाद्य
54. Concupiscence	वासना
55. Sententius	जटिल, गूढ़पदावली
56. Florescent	विकचमान
57. Righteous	सन्मार्गी, धर्माचारी
58. Dexterity	लाघव
59. Odyssey	अभिसार
60. Buoyant	उत्ताल
61. Copious	प्रचुरम्, भरभरितम्
62. Recesses	गुह्यकोष्ठ अन्तस्तल
63. Intransigent	अप्रसाद्य, हठी
64. Portentious	अपशकुन, अशुभसूचक
65. Pandemonium	पिशाचसभा

संभवतः आपको आश्चर्य और कुतूहल होगा यदि मैं बताऊँ कि संस्कृत भाषा भारतीय समाज के जीवन में इतनी गहराई तक पैठी हुई है कि हमारे मुसलमान बन्धु भी प्रतिदिन अपने सामान्य व्यवहार में सैकड़ों संस्कृत और उनके तद्भव शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं। उदाहरण स्वरूप निम्नांकित शब्दसूची देखिये :

१. पूरब	(पूर्वः)	२९. गीत-संगीत	(गीतम्)
२. पच्छिम	(पश्चिमः)	३०. राग	(रागः)
३. उत्तर	(उत्तरः)	३१. आँख	(अक्षि)
४. दक्खिन	(दक्षिणः)	३२. कान	(कर्णः)
५. चाँद	(चन्द्रः)	३३. नाक	(नासिका)
६. सूरज	(सूर्यः)	३४. मुँह	(मुखम्)
७. तारा	(ताराः)	३५. दाँत	(दन्ताः)
८. दिन	(दिनम्)	३६. जीभ	(जिह्वा)
९. रात	(रात्रिः)	३७. ओठ	(ओष्ठम्)
१०. साँझ	(सन्ध्या)	३८. सिर	(शिरः)
११. रोटी	(रोटिका)	३९. हाथ	(हस्तौ)
१२. दाल	(द्विदलम्)	४०. अँगुली	(अङ्गुलिः)
१३. जौ	(यवः)	४१. नख	(नखम्)
१४. गेहूं	(गोधूमः)	४२. सपना	(स्वप्नम्)
१५. गुड़	(गुडम्)	४३. अमृत	(अमृतम्)
१६. शक्कर	(शर्करा)	४४. आना	(आयाति)
१७. चना	(चणकम्)	४५. जाना	(याति)
१८. फल	(फलम्)	४६. तैरना	(तरति)
१९. फूल	(पुष्पम्)	४७. गाना	(गायति)
२०. पत्ता	(पत्रम्)	४८. चलना	(चलति)
२१. घर	(गृहम्)	४९. हँसना	(हसति)
२२. द्वार	(द्वारम्)	५०. खेलना	(खेलति)
२३. सुख	(सुखम्)	५१. लिखना	(लिखति)
२४. दुःख	(दुःखम्)	५२. पढ़ना	(पठति)
२५. धरती	(धरित्री)	५३. दूध	(दुग्धम्)
२६. आकाश	(आकाशम्)	५४. दही	(दधि)
२७. जनम	(जन्म)	५५. मांस	(मांसम्)
२८. बीज	(बीजम्)	५६. खीर	(क्षीरम्)

५७.	पानी	(पानीयम्)	८०.	देस	(देशः)
५८.	पशु	(पशुः)	८१.	आम	(आम्रम्)
५९.	गाय	(गौः)	८२.	जामुन	(जम्बूफलम्)
६०.	बछड़ा	(वत्स, वच्छ)	८३.	अमरूद	(अमृतफलम्)
६१.	अच्छा	(अच्छः)	८४.	नीम	(निम्बः)
६२.	साया	(छाया)	८५.	हाथी	(हस्ती)
६३.	सफेद	(श्वेत)	८६	ऊँट	(उष्ट्रः)
६४.	उजला	(उज्ज्वलः)	८७.	एक,दो,तीन,पाँच, छः, सात,आठ,नौ, दश, बीस, तीस	
६५.	ऊपर	(उपरि)			
६६.	नीचे	(नीचैः)			
६७.	ऊँचा	(उच्चैः)	८८.	बल	(बलम्)
६८.	आगे	(अग्रे)	८९.	बहुत	(बहु, प्रभूत)
६९.	छेद	(छिद्रम्)	९०.	सुन्दर	(सुन्दरम्)
७०.	बिल	(बिलम्)	९१.	राजा	(राजा)
७१.	बहरा	(बधिरः)	९२.	रानी	(राज्ञी)
७२.	गूंगा	(मूकः)	९३.	देवता	(देवता)
७३.	सब	(सर्वः)	९४.	राक्षस	(राक्षसः)
७४.	आग	(अग्निः)	९५.	रितु	(ऋतुः)
७५.	सोना	(स्वर्णम्)	९६.	बरखा	(वर्षा)
७६.	लोहा	(लौहम्)	९७.	वीरः	(वीरः)
७७.	काठ	(काष्ठम्)	९८.	नर, नारी	(नरः नारी)
७८.	पर्वत	(पर्वतः)	९९.	खेत	(क्षेत्रम्)
७९.	समुन्दर	(समुद्रः)	१००.	देह	(देहः)

संस्कृत भाषा सरल और ललित होने के साथ-साथ बहुत ही समृद्ध भाषा है। संस्कृत साहित्य में वह सब कुछ है जो विश्व के किसी भी उत्कृष्टतम साहित्य में है अर्थात् अध्यात्म, धर्म, दर्शन, काव्य, महाकाव्य नाटक, इतिहास, कहानी, उपन्यास, संगीत, गणित, ज्योतिष, आयुर्विज्ञान, मंत्र, तंत्र, व्यंग्य, हास्य यह सब कुछ प्रचुर मात्रा में है। अतः आप इस आशा और उत्साह के साथ संस्कृत का अध्ययन करें कि इस भाषा के ज्ञान से आप के लिए उस भव्य मंदिर के द्वार खुल रहे हैं जहाँ आसीन हैं महर्षि वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, पतंजलि, कालिदास, भवभूति, माघ, भारवि, हर्ष बाणभट्ट, जयदेव। अब इन महापुरुषों की वाणी को उन्हीं के शब्दों में सुन सकेंगे। अब आपको अनुवाद रूपी दुभाषिये (Interpreter) की आवश्यकता न होगी।

प्रयागदत्त चतुर्वेदी

प्राक्कथन

विश्वविख्यात दार्शनिक एवं संस्कृतविद् मेक्सम्यूलर ने कहा था कि यदि मुझसे पाश्चात्य दृष्टिकोण से यह पूछा जाय कि मानव के विश्व इतिहास में उन्नीसवीं सदी की सबसे प्रमुख खोज या प्राप्ति क्या है तो मैं कहूंगा "संस्कृत"।

कदाचित् इसी से प्रभावित होकर ए० एल० बाशम ने "कल्चरल हिस्ट्री आफ इण्डिया" में कहा है कि संस्कृत ही भारत की आत्मा है। उनके अनुसार संस्कृत ही सही मायने में भारत की राष्ट्रभाषा है जिसने सभी पंथों और वर्गों को भारतीय संस्कृति से जोड़ा है—यदि वह लुप्त हो गई, तो इसके साथ भारतीय संस्कृति भी समाप्त हो जायेगी (पृष्ठ–197)।

वास्तविकता यह है कि संस्कृत, जो कम से कम पाँच हजार वर्ष पुरानी भाषा है, न केवल अन्य भारतीय भाषाओं की जननी है, बल्कि उसने भारत के हर क्षेत्र को सशक्त एवं पोषित किया है। दूसरे अर्थों में देव-भाषा न केवल भारतीय संस्कृति की आत्मा है, बल्कि उसके प्रचलन ने बौद्धिक भारत को एकता के सूत्र में बाँधा है। बाद में प्राकृत, अर्ध-मागधी एवं पाली (जो संस्कृत का ही अपभ्रश है) के माध्यम से भारतीय संस्कृति एव सभ्यता का सुदूर पूर्व एवं दक्षिणपूर्व एशिया में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

विडम्बना यह है कि विभिन्न कारणों से, हमने अपने ही देश में इस ऐश्वर्यशाली विरासत को, जो संस्कृत भाषा के साहित्य से मिली, शनैः शनैः गँवा दिया और अब तो प्रश्नचिह्न इस पर भी लग गया है कि भारत के इस बुद्धिवैभव का स्रोत अब प्रवाहित होता भी रहेगा या नहीं।

यह हमारा सौभाग्य है कि शोपेनहावर सर विलियम जोन्स, विण्टरनित्ज, मैक्सम्यूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों के अलावा, अनेक भारतीय विद्वानों ने, यथा विवेकानन्द, अरबिन्द घोष, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, सी राजगोपालाचारी आदि एवं कतिपय लब्ध-प्रतिष्ठ संस्कृतसेवी संस्थान् ने अंग्रेजी के माध्यम से अब तक हमारे संस्कृत साहित्य तथा संस्कृति के स्रोत को शुष्क नहीं होने दिया। परन्तु जिन्होंने भी उनकी कृतियों का गहन

अध्ययन किया, उनके मन में कभी न कभी, कम से कम मेरे मन में तो सदैव ही –यह इच्छा जागृत हुई कि कितना अच्छा होता कि हम बजाय अनूदित कृतियों के, अपनी धरोहर को मूल रूप से पढ़कर समझ सकें।

संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कदम उठाये गये। परन्तु संस्कृत आयोग के प्रतिवेदन पर भी कोई सशक्त कदम उठाया गया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। कदाचित् संस्कृत के प्रति उदासीनता को देखते हुए ही बहुत साल पहले स्वनामधन्य स्वर्गीय दामोदर सालवलेकर ने औंध व बाद में पालड़ी (गुजरात) के स्वाध्याय-मण्डल के माध्यम से संस्कृत पाठमाला निकाली। उनका दावा था कि इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान तीस दिनों में ही प्राप्त हो सकता है। यह पाठमाला बड़ी लोकप्रिय एवं उपयोगी सिद्ध हुई और बुद्धिजीवियों के लिये एक वरदान साबित हुई। उसी कड़ी में आज यह प्रकाशन पाठकों के समक्ष संस्कृत के विद्वान् पण्डित प्रयागदत्त चतुर्वेदी इस अपेक्षा के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि कम से कम उन लोगों को, जो मूल संस्कृत ग्रन्थों का पूर्ण लाभ नहीं उठा सकते, इतना व्यावहारिक ज्ञान हो जाय कि वह न्यूनाधिक मूल का आनन्द उठा सकें। प्रयास स्तुत्य है और मुझे पूर्ण आशा है कि स्व० दामोदर सालवलेकर ने जो बीड़ा उठाया था, उस उद्देश्य की पूर्ति में यह कृति एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगी। यदि सभी विद्यालयों, विश्वविद्यालयों अथवा अन्य सभी पुस्तकालयों में इसे रखा जा सके तो इसका व्यापक लाभ मिल सकेगा। मुझे तो कम से कम अप्रत्याशित लाभ मिला ही है और इसके लिये मैं अनुज श्री प्रयागदत्त के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं साधुवाद प्रकट करता हूँ। उनके नवीनतम प्रयास की सफलता के लिये शुभकामनायें प्रस्तुत करता हूँ।

आर० के० त्रिवेदी
भूतपूर्व राज्यपाल
गुजरात

प्रथमः दिवसः

आपके शब्द-भंडार के ७५ प्रतिशत संस्कृत शब्द हैं। आप नित्य अपने दैनन्दिन व्यवहार में सैकड़ों संस्कृत शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं और इस प्रकार पहले से ही संस्कृत जानते हैं। आइये, इस संस्कृत-ज्ञान को विकसित करें। निम्नांकित संस्कृत शब्दों को देखें। क्या आप इन्हें नहीं जानते ?

१. अन्नम्
२. जलम्
३. भोजनम्
४. फलम्
५. दुग्धम्
६. दधि
७. तक्रम्
८. गुडः
९. शर्करा
१०. तिलः
११. जीरः
१२. मूलकः
१३. धन्या
१४. मसूरः
१५. माषः
१६. यवः
१७. अच्छः
१८. स्वच्छम्
१९. सुखम्
२०. दुःखम्
२१. सुधा
२२. पुण्यम्
२३. पापम्
२४. शोकः
२५. तापः
२६. राजा
२७. ऐश्वर्यम्
२८. लक्ष्मीः
२९. पुरुषः
३०. स्त्री
३१. नरः
३२. नारी
३३. बालकः
३४. बालिका
३५. कन्या
३६. पुत्रः
३७. पुत्री
३८. माता
३९. पिता
४०. जनकः
४१. जननी
४२. भ्राता
४३. बन्धुः
४४. भगिनी
४५. शत्रुः
४६. मित्रम्
४७. यशः (नपुं०)
४८. जीवनम्
४९. मरणम्
५०. लाभः
५१. हानिः
५२. शृङ्गारः
५३. संयोगः
५४. वियोगः
५५. रसः
५६. बीजम्
५७. द्वारम्
५८. पशुः
५९. पक्षी
६०. मृगः
६१. हरिणः
६२. व्याघ्रः
६३. सिंहः
६४. गौः
६५. धेनुः
६६. वृषभः
६७. अश्वः
६८. गजः
६९. हस्ती
७०. मनुष्यः
७१. देवता
७२. राक्षसः
७३. दैत्यः
७४. आदिः
७५. मध्यः
७६. संहारः
७७. उत्पत्तिः
७८. प्रलयः

७९. आकाशः,आकाशम्
८०. पातालम्
८१. पृथ्वी, पृथिवी
८२. भूमिः
८३ स्वर्गः
८४. नरकः
८५. सुन्दरः
८६. दर्शनम्
८७. बन्धनम्
८८. मोक्षः
८९. सूर्यः
९०. चन्द्रः
९१. तारा
९२. नक्षत्रम्
९३. ग्रहः
९४. नभः
९५. दिवसः, दिवा,
दिनम्
९६. अमृतम्
९७. विषम्
९८. निशा
९९. प्रातः
१००. सायम्
१०१. कालः, समयः
१०२. मध्याह्नः
१०३. पूर्वाह्णः
१०४. अपराह्णः
१०५. परस्परम्
१०६. नृपतिः
१०७. प्रजा
१०८. शासनम्
१०९. सेना
११०. बलम्

१११. वर्षम्
११२. कुलम्
११३. शीलम्
११४. ज्ञानम्
११५ गुणः
११६. धर्मः
११७. मंत्री
११८. सचिवः
११९. रक्षितम्
१२०. खाद्यम्
१२१. वस्तु
१२२. चिकित्सा
१२३. वनम्
१२४. कृषिः
१२५. ग्रामः
१२६. नगरम्
१२७. विकासः
१२८. परिवारः
१२९. स्नानम्
१३०. अभिषेकः
१३१. ध्यानम्
१३२. जपः
१३३. तपः
१३४. अर्चना
१३५ सर्वकारः
१३६. शिक्षा
१३७. शान्तिः
१३८. पूजा
१३९. पुस्तकम्
१४०. लेखनी
१४१. पठनम्,पाठनम्
१४२. अध्ययनम्,
अध्यापनम्

१४३. वर्षा
१४४. शरत्
१४५. वसन्तः
१४६. हेमन्तः
१४७. शिशिरः
१४८. ऋतुः
१४९. इच्छा
१५०. संकल्पः
१५१. कार्यम्
१५२. श्रमः
१५३. सरलः
१५४. कठिनः
१५५. संपत्तिः
१५६. विपत्तिः
१५७. स्थानम्
१५८. भवनम्
१५९. सज्जनः
१६०. दुर्जनः
१६१. खलः
१६२. उदारः
१६३. धीरः
१६४. वीरः
१६५. शूरः
१६६. मनोहरः
१६७. हस्तः
१६८. पादः
१६९. मुखम्
१७०. नासिका
१७१. उदरम्
१७२. यदि
१७३. यथा
१७४. परन्तु
१७५. अथवा

१७६. शीघ्रम्	१८४. सेवम्	१९३. पश्चात्
१७७. शनैः शनैः	१८५. खर्जूरः	१९४. सदा, सदैव
१७८. मांसम्	१८६. आलुः	१९५. सहसा
१७९. द्विदलम्, सूपः	१८७. लशुनः	१९६. वाणी
१८०. खर्बूजः	१८८. गोपः	१९७. शिरः
१८१. तर्बूजः	१८९. आम्रम्	१९८. चक्षुः
१८२. नारंगः, नारंगम्, नारंगी	१९०. राका, पूर्णिमा	१९९. जिह्वा
	१९१. अनन्तरम्	२००. अंगुलिः
१८३. आमलकः	१९२. कठोरम्	२०१. नखः

इसी प्रकार आपके दैनिक संभाषण में प्रयुक्त हो रही अनेकानेक क्रियायें भी वस्तुतः संस्कृत की क्रियायें हैं।

उदाहरणार्थ—

१. जाता है	याति	२१. तैरता है	तरति
२. आता है	आयाति	२२. दौड़ता है	धावति
३. हँसता है	हसति	२३. गरजता है	गर्जति
४. पढ़ता है	पठति	२४. रोता है	रोदिति
५. लिखता है	लिखति	२५. लोटता है	लुठति
६. गाता है	गायति	२६. करता है	करोति
७. नाचता है	नृत्यति	२७. रक्षा करता है	रक्षति
८. खाता है	खादति	२८ खिलता है	विकसति
९. खेलता है	खेलति	२९. भ्रमण करता है	भ्रमति
१०. चलता है	चलति	३० दहन करता है	दहति
११. पीता है	पिबति	३१. देता है	ददाति
१२. मिलता है	मिलति	३२. बोलता है	भाषते, वदति
१३. नष्ट होता है	नश्यति	३३. कहता है	कथयति
१४. गिरता है	पतति	३४. उदित होता है	उदयति, उदेति
१५. रटता है	रटति	३५. सेवा करता है	सेवते
१६. सींचता है	सिंचति	३६. प्रकट करता है	प्रकटयति
१७. शाप देता है	शपति	३७. निन्दा करता है	निन्दति
१८. होता है	भवति	३८. प्रवेश करता है	प्रविशति
१९. फलता है	फलति	३९. पूर्ण करता है	पूरयति
२०. वहन करता है	वहति	४०. अभिलाषा करता है	अभिलषति

४१. स्नेह करता है	स्निह्यति
४२. क्रोध करता है	क्रुध्यति, कुप्यति
४३. ईर्ष्या करता है	ईर्ष्यति
४४. इच्छा करता है	इच्छति
४५. नमस्कार करता है	नमस्करोति
४६. प्रणाम करता है	प्रणमति
४७. निवारण करता है	निवारयति
४८. जानता है	जानाति
४९. कूजता है	कूजति
५०. प्राप्त करता है	प्राप्नोति
५१. लगता है	लगति

———

द्वितीयः दिवसः

आइये, सर्वप्रथम संस्कृत वर्णमाला से आपका परिचय करायें। संस्कृत की वर्णमाला वही है जो हिन्दी की है। केवल उसके प्रस्तुतीकरण में अन्तर है।

स्वर वर्ण (संख्या ९)

स्वरों को 'अच्' कहा जाता है।

अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ

ह्रस्व स्वर	–अ, इ, उ, ऋ, लृ
दीर्घ स्वर	–आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ
अनुस्वार	– ं (हंस)
अनुनासिक	– ँ (पुंस्कोकिल)
विसर्ग	– : (रामः, कृष्णः)

व्यंजन वर्ण (संख्या ३३)

व्यंजनों को 'हल्' कहा जाता है।

क, ख, ग, घ, ङ	कवर्ग – कु	
च, छ, ज, झ, ञ	चवर्ग – चु	ये २५ वर्ण स्पर्श कहे जाते हैं।
ट, ठ, ड, ढ, ण	टवर्ग – टु	
त, थ, द, ध, न	तवर्ग – तु	
प, फ, ब, भ, म	पवर्ग – पु	

य, र, ल, व – ये चार वर्ण अन्तःस्थ कहे जाते हैं।

श, ष, स, ह – ये चार वर्ण ऊष्म कहे जाते हैं। इनमें श को तालव्य, ष को मूर्धन्य तथा स को दन्त्य कहा जाता है।

क्ष, त्र, ज्ञ – ये तीन वर्ण संयुक्ताक्षर कहे जाते हैं। इनमें क्ष, क् और ष के योग से बनता है। त्र, त् और र के योग से बनता है। ज्ञ, ज् और ञ के योग से बनता है। इन तीनों की स्वतंत्र रूप से गणना नहीं होती।

संस्कृत के महान् वैयाकरण पाणिनि ने संस्कृत वर्णमाला को निम्नांकित १४ सूत्रों में आबद्ध किया है। ये सूत्र शिवसूत्र अथवा माहेश्वर सूत्र कहलाते हैं और शिवजी के डमरू से उद्भूत बताये जाते हैं।

अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच् हयवरट् लण् ञमङणनम् झभञ् घढधष् जबगडदश् खफछठथचटतव् कपय् शषसर् हल्।

इन सूत्रों में ण् क्, ङ्, च्, ट् आदि अन्तिम वर्ण को 'इत्' कहा जाता है तथा सूत्रस्थ किसी भी वर्ण से किसी भी इत् वर्ण तक के अक्षरसमूह को प्रत्याहार कहते हैं। ये प्रत्याहार आगे चलकर संधियों को समझने में बहुत सहायक होंगे। शिवसूत्र के अच् प्रत्याहार से सारे स्वरों अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ औ तथा हल् से सारे व्यंजनों का बोध होता है।

उपर्युक्त शिवसूत्र में वर्णों को इस क्रम में आबद्ध किया गया है कि सर्वप्रथम स्वर, फिर अन्तःस्थ वर्ण, तदुत्तर मृदु व्यंजन अर्थात् कवर्ग से लेकर पवर्ग तक के पंचम वर्ण, फिर सभी चतुर्थ वर्ण, फिर सभी तृतीय वर्ण, फिर कठोर व्यंजन अर्थात् द्वितीय वर्ण, प्रथम वर्ण और अन्ततः ऊष्म व्यंजन वर्ण आते हैं।

———

तृतीयः दिवसः

वर्तमान काल (लट् लकार)

१. बालकः पठति।	बालक पढ़ता है।
२. बालिका खेलति।	बालिका खेलती है।
३. मोहनः हसति।	मोहन हँसता है।
४. शुकः रटति।	तोता रटता है।
५. सिंहः गर्जति।	सिंह गरजता है।
६. रामः गच्छति।	राम जाता है।
७. सीता गायति।	सीता गाती है।
८. गीता नृत्यति।	गीता नाचती है।
९. वानरः कूर्दति।	बन्दर कूदता है।
१०. बालकौ पठतः।	दो बालक पढ़ते हैं।
११. बालिके लिखतः।	दो बालिकायें लिखती हैं।
१२. अश्वौ धावतः।	दो घोड़े दौड़ते हैं।
१३. वानरौ कूर्दतः।	दो वानर कूदते हैं।
१४. मृगाः धावन्ति।	मृग दौड़ते हैं।
१५. छात्राःपठन्ति।	विद्यार्थी पढ़ते हैं।
१६. देवाः रक्षन्ति।	देवगण रक्षा करते हैं।
१७. बालाः क्रीडन्ति।	लड़के खेलते हैं।
१८. जलम् वर्षति।	जल बरसता है।
१९. फलानि पतन्ति।	फल गिरते हैं।
२०. पुष्पाणि विकसन्ति।	फूल खिलते हैं।

इन वाक्यों को ध्यान से देखें। इनमें सभी में केवल 'ति', 'तः' और 'न्ति' लगाकर धातुयें एक वचन, द्विवचन और बहुवचन में वर्तमान काल में वाक्य बना रही हैं। अंग्रेजी की भाँति संस्कृत में भी तीन पुरुष (Person) होते हैं। अंग्रेजी के first person को संस्कृत में उत्तम पुरुष, second person को मध्यम पुरुष और third person को प्रथम पुरुष कहा जाता है।

अंग्रेजी और हिन्दी में Singular और Plural अर्थात् एकवचन और बहुवचन संज्ञाओं एवं क्रियाओं में प्रयुक्त होते हैं। किन्तु दो की संख्या बताने के लिये अलग से कोई वचन नहीं है। संस्कृत भाषा में एक विशेषता है। यहाँ एकवचन और बहुवचन के अतिरिक्त द्विवचन भी एक number है।

'पठ्' धातु के वर्तमान (लट्) में रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

इसी प्रकार गम्, धाव्, गर्ज्, रक्ष्, रट्, हस्, क्रीड्, लिख् आदि धातुओं से वर्तमान काल के रूप बनाये जा सकते हैं।

'बालक' पुँल्लिंग शब्द के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	,,	बालकेभ्यः
पंचमी	बालकात्	,,	,,
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
संबोधन	हे बालक	हे बालकौ	हे बालकाः

इसी प्रकार रामः, नरः, मनुष्यः, देवः, दानवः आदि के रूप होंगे।

'फलम्' नपुंसकलिंग शब्द के रूप

प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष रूप बालक शब्द के समान होते हैं।

इसी प्रकार दुःखम्, सुखम्, धनम्, मित्रम्, बलम्, अमृतम्, विषम्, नयनम्, कमलम्, पापम्, वनम्, वस्त्रम्, भूषणम् आदि के रूप होंगे।

'सीता' स्त्रीलिंग शब्द के रूप

प्रथमा	सीता	सीते	सीताः
द्वितीया	सीताम्	सीते	सीताः
तृतीया	सीतया	सीताभ्याम्	सीताभिः
चतुर्थी	सीतायै	,,	सीताभ्यः
पंचमी	सीतायाः	,,	,,
षष्ठी	सीतायाः	सीतयोः	सीतानाम्
सप्तमी	सीतायाम्	,,	सीतासु
संबोधन	हे सीते	हे सीते	हे सीताः

इसी प्रकार बालिका, गंगा, यमुना, रमा, उमा, माला, कला विद्या आदि शब्दके रूप होंगे।

अंग्रेजी की भांति संस्कृत में भी कर्ता और क्रिया का सामंजस्य आवश्यक है। यदि कर्ता एकवचन में है तो क्रिया एकवचन में होगी। यदि कर्ता बहुवचन में है तो क्रिया भी तदनुरूप बहुवचन में होगी। ऊपर पृष्ठ ७ पर दिये गये २० वाक्यों में यह स्पष्ट लक्षित है।

किसी वाक्य में जब च (और) के द्वारा जुड़े हुए दो कर्ता हों, तो क्रिया दोनों के संयुक्त वचन के अनुसार होगी। जैसे—

रामः गोविन्दश्च विद्यालयं गच्छतः।

जब कर्ता वाक्य में 'वा' या 'अथवा' से जुड़े हों तो क्रिया एकवचन में रखी जाती है। जैसे—

रामो गोविन्दः कृष्णो वा गच्छति।

जब वाक्य में कर्ता भिन्न-भिन्न वचन के हों तो क्रिया निकटतम कर्ता के अनुसार होगी। जैसे—

ते वा वयं वा गच्छामः।

जब किसी वाक्य के कर्ता अलग-२ पुरुष में हों तो क्रिया मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष की अपेक्षा उत्तम पुरुष के अनुसार और प्रथम पुरुष की अपेक्षा मध्यम पुरुष के अनुकूल चलती है। जैसे—

त्वं च अहं च पचावः।

त्वं च सोमदत्तश्च कर्णश्च पठन्ति।

किंकराः ते अहं च गच्छामः।

———

चतुर्थः दिवसः

कर्म के साथ लट् अर्थात् वर्तमान काल का प्रयोग

१. बालिका चित्रं पश्यति ।	बालिका चित्र देखती है ।
२. बालकः पाठं रटति ।	बालक पाठ रटता है ।
३. श्यामः रोटिकां खादति ।	श्याम रोटी खाता है ।
४. छात्रः पुस्तकं पठति ।	छात्र पुस्तक पढ़ता है ।
५. रामः गृहं गच्छति ।	राम घर जाता है ।
६. गीता पत्रं लिखति ।	गीता पत्र लिखती है ।
७. उष्ट्रः भारं वहति ।	ऊँट भार ढोता है ।
८. शिशुः चन्द्रं पश्यति ।	बच्चा चन्द्रमा को देखता है ।
९. मोहनः मन्दिरं गच्छति ।	मोहन मन्दिर जाता है ।
१०. मृगः तृणं खादति ।	मृग घास खाता है ।
११ सीता सत्यं वदति ।	सीता सच बोलती है ।
१२. कन्ये गृहं गच्छतः ।	दो लड़कियाँ घर जाती हैं ।
१३. बालकौ पाठं पठतः ।	दो बालक पाठ पढ़ते हैं ।
१४. मृगौ घासं खादतः ।	दो मृग घास खात हैं ।
१५. छात्रौ पत्रं पठतः ।	दो छात्र पत्र पढ़ते हैं ।
१६ खगौ फलं खादतः ।	दो पक्षी फल खाते हैं ।
१७. बालिकाः चित्रं पश्यन्ति ।	लड़कियां चित्र देखती हैं ।
१८. बालकाः पाठं रटन्ति ।	बालक पाठ रटते हैं ।
१९. भृत्याः भारान् वहन्ति ।	नौकर भार ढोते हैं ।
२०. मेघाः जलं वर्षन्ति ।	मेघ जल बरसाते हैं ।
२१. मृगाः घासं खादन्ति ।	मृग घास खाते हैं ।
२२ कृषकाः क्षेत्रम् कर्षन्ति ।	किसान खेत जोतते हैं ।
२३. वानराः फलानि खादन्ति ।	वानर फल खाते हैं ।
२४. सज्जनाः सत्यं वदन्ति ।	सज्जन सत्य बोलते हैं ।
२५. जनाः समाचारपत्राणि पठन्ति ।	लोग समाचारपत्र पढ़ते हैं ।

आप देखेंगे कि उपर्युक्त वाक्यों में भी वर्तमान काल का प्रयोग हुआ है और क्रियाओं के वही स्वरूप हैं जो तृतीय दिवस के पाठ में 'पठ्' धातु लट् लकार के लिये बताये गये हैं ।

इन वाक्यों में बीच में कर्म भी जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार आप कर्म सहित सैकड़ों वर्तमान काल के वाक्य सहज ही बना सकते हैं।

स्मरणीयानि सुभाषितानि

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥१॥

गंगा पापं शशी तापं, दैन्यं कल्पतरुस्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च, हन्ति साधुसमागमः ॥२॥
(सुभाषितरत्नभांडागार)

आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषणम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम् ॥३॥
(चाणक्यनीति)

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं, नाऽलंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं, या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं, वाग्भूषणं भूषणम् ॥४॥
(नीतिशतकम्)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥५॥

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति
रुदन्ति नृत्यन्ति समाश्रयन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः
प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगाः ॥६॥

पंचमः दिवसः

भविष्यत् काल (लृट् लकार)

१. रामः पठिष्यति ।	राम पढ़ेगा ।
२. बालकः गमिष्यति ।	बालक जायेगा ।
३. गीता नर्तिष्यति ।	गीता नाचेगी ।
४. सीता लेखिष्यति ।	सीता लिखेगी ।
५. बालकाः हसिष्यन्ति ।	लड़के हसेंगे ।
६. सिहाः गर्जिष्यन्ति ।	सिंह गरजेंगे ।
७. कोकिलाः कूजिष्यन्ति ।	कोयलें कूकेंगी ।
८. फलम् पतिष्यति ।	फल गिरेगा ।
९. बालाः क्रीडिष्यन्ति ।	बच्चे खेलेंगे ।
१०. देवाः रक्षिष्यन्ति ।	देवगण रक्षा करेंगे ।

'पठ' धातु के लृट् रूप

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

ऊपर अंकित वाक्यों में भविष्यत् काल की ही क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। इन्हें ध्यान से देखें तो स्पष्ट होगा कि संस्कृत में भविष्यत्काल का वाक्य बनाना कितना सरल है। इसी प्रकार आप अनेक भविष्यत् काल के वाक्य बना सकते हैं। भविष्यत्काल (जिसे 'लृट्' कहते हैं) में धातुओं के रूप तीनों पुरुषों और तीनों वचनों में ऊपर लिखित 'पठ्' के रूपों की भाँति होंगे।

षष्ठः दिवसः (सर्वनाम)

संस्कृत में भी सर्वनाम वही कार्य करते हैं जो ये हिन्दी और अंग्रेजी में करते हैं अर्थात् वे किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं या कभी-कभी विशेषण और संख्यासूचक के रूप में। संस्कृत में सर्व आदि ३५ सर्वनाम शब्द हैं। उनमें से प्रमुख सर्वनाम है—

अस्मद्, युष्मद्, भवत्, तद्, यद्, सर्व, इदम्, किम्, एतद्. इनके रूप नीचे अंकित किये जा रहे हैं।

'अस्मत्' शब्द के रूप (मैं)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्	,,	अस्मभ्यम्
मत्	,,	अस्मत्
मम	आवयोः	अस्माकम्
मयि	,,	अस्मासु

'युष्मत्' शब्द के रूप (तुम)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम्	,,	युष्मान्
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तुभ्यम्	,,	युष्मभ्यम्
त्वत्	,,	युष्मत्
तव	युवयोः	युष्माकम्
त्वयि	,,	युष्मासु

१. अहम् पठामि।	मैं पढ़ता हूँ।
२. सः क्रीडति।	वह खेलता है।
३. सा नृत्यति।	वह नाचती है।

४ वयम् पठामः । हम लोग पढ़ते हैं ।
५. तो लिखतः । वे दोनों लिखते हैं ।
६. ते क्रीडन्ति । वे सब खेलते हैं ।
७. त्वम् हसिसि । तुम हँसते हो ।

तत् शब्द पुं० के रूप

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	"	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै।	"	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	"	"
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	"	तेषु

तत् शब्द स्त्रीलिंग के रूप

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	"	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	"	"
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	"	तासु

तत् शब्द के नपुंसकलिंग के रूप

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष तत् शब्द के रूप पुंल्लिंग के रूपों के समान होंगे ।

सप्तमः दिवसः

आज्ञार्थक (लोट् लकार)

१. बालिका खेलतु ।	बालिका खेले ।
२. बालिके खेलताम् ।	दो बालिकायें खेलें ।
३. बालिकाः खेलन्तु ।	बालिकायें खेलें ।
४. बालकः गच्छतु ।	बालक जाये ।
५. बालकौ गच्छताम् ।	दो बालक जायें ।
६. बालकाः गच्छन्तु ।	सब बालक जायें ।
७. छात्रः पठतु ।	छात्र पढ़े ।
८. छात्रौ पठताम् ।	दो छात्र पढ़ें ।
९. छात्राः पठन्तु ।	सब छात्र पढ़ें ।
१०. त्वम् पठ ।	तुम पढ़ो ।
११. बालकः लिखतु ।	बालक लिखे ।
१२. बालकौ लिखताम् ।	दो बालक लिखें ।
१३. बालकाः लिखन्तु ।	सब बालक लिखें ।
१४. मनुष्याः सुखिनः भवन्तु ।	मनुष्य सुखी हों ।
१५. जना निरामयाः सन्तु ।	मनुष्य नीरोग हों ।
१६. सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।	सभी का कल्याण हो ।

'पठ' धातु के आज्ञा (लोट्) रूप

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

अभ्यास

छात्राः विद्यालयं...... ।	छात्र विद्यालय को जायें ।
लोकनायकाः देशं...... ।	नेता लोग देश की रक्षा करें ।
जना देशभक्ताः........ ।	लोग देशभक्त हों ।
लोकपालाः प्रजां....... ।	नेता लोग प्रजा को पीड़ा न दें ।
बालकाः सदैव सत्यं प्रियं च...।	बालक सदा सत्य और प्रिय बोलें ।
आचार्याः धर्मान्..... ।	आचार्य लोग धर्म का उपदेश करें ।
धनपालाः दीनेभ्यः धनानि.... ।	धनपाल दीनों को धन देवें ।

: १ :

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।

: २ :

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्र्याः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥

: ३ :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

: ४ :

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

: ५ :

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मस्तु नो यत्र न सत्यमस्ति
सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति॥

: ६ :

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं
भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोषगते द्विरेफे
हा! हन्त! हन्त! नलिनीं गज उज्जहार॥

: ७ :

न तज्जलं यन्न सुचारु पंकजं
न पंकजं तद् यदलीनषट्पदम्।
न षट्पदोऽसौ न जुगुंज यः कलं
न गुंजितं तन्न जहार यन्मनः॥

अष्टमः दिवसः

भूतकाल अनद्यतन भूत (लङ् लकार)

१. बालकः पुस्तकम् अपठत्	बालक ने पुस्तक पढ़ी।
२. बालिके गृहम् अगच्छताम्।	दो लड़कियां घर गयीं।
३. राधा माधवम् अपश्यत्।	राधा ने माधव को देखा।
४. पंडिताः काव्यं अपठन्	पंडितों ने काव्य पढ़ा।
५. शिवः विषम् अपिबत्।	शिव ने विष पीया।
६. देवाः अमृतम् अखादन्।	देवों ने अमृत खाया।
७. सा सत्यं अवदत्।	वह सत्य बोली।
८. भक्ताः हरिं अभजन्।	भक्तों ने हरि का भजन किया।
९. वनम् अनश्यत्।	वन नष्ट हो गया।
१०. रामः अयोध्याम् अत्यजत्।	राम ने अयोध्या छोड़ी।
११. फलानि अपतन्।	फल गिरे।
१२. कृष्णः कंसम् अहन्।	कृष्ण ने कंस को मारा।
१३, अहम् आपणम् अगच्छम्।	मैं बाजार गया।
१४. त्वम् कुत्र अतिष्ठः।	तुम कहां ठहरे ?

भूतकाल (लङ् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

अभ्यासः

सोहनः गृहम् ...... (गया)।	शीला पत्रम् ...... (लिखा)।
सा फलम् ...... (खाया)।	रामः रावणं ...... (मारा)।
अहं पुस्तकम् ...... (पढ़ी)।	ते ईश्वरम् ...... (भजन किया)।
बालकः दुग्धम् ...... (पीया)।	मोहनः सोहनं ...... (देखा)।
राजा प्रजाम् ...... (रक्षा की)।	कृष्णः गोकुले ...... (रहे)।

नवमः दिवसः

विधिलिङ् लकार

१. छात्रः पुस्तकम् पठेत् ।	विद्यार्थी को पुस्तक पढ़नी चाहिए ।
२. रामः गृहं गच्छेत् ।	राम को घर जाना चाहिए ।
३. असत्यं न वदेत् ।	असत्य नहीं बोलना चाहिए ।
४. धर्मम् आचरेत् ।	धर्म का आचरण करना चाहिए ।
५. धैर्यम् न त्यजेत् ।	धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए ।
६. गीता पत्रं लिखेत् ।	गीता को पत्र लिखना चाहिए ।
७. त्वम् रामायणं पठेः ।	तुम्हें रामायण पढ़नी चाहिए ।
८. ईश्वरं चिन्तयेत् ।	ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए ।
९. गुरुम् न निन्देत् ।	गुरु की निन्दा नहीं करनी चाहिए ।
१०. पितरौ पूजयेत् ।	माता-पिता की पूजा करनी चाहिए ।

पठ् धातु के विधिलिङ् रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

अभ्यासः

छात्राः विद्यालयम् ······ भक्तः ईश्वरम् ··········

सत्यस्य मार्गम् न ······ रुग्णः जनः अपथ्यं न ·······

नग्नः जले न ········ हस्तौ प्रक्षाल्य भोजनं ······

———

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥

: २ :

दिवसान्ते पिबेत् दुग्धं शयनान्ते पयः पिबेत् ।
भोजनान्ते पिबेत् तक्रं वैद्यस्य किं प्रयोजनम् ॥

: ३ :

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत् ।
सत्यपूतां वदेद् वाचं मनः पूतं समाचरेत् ॥

: ४ :

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ॥

संस्कृत व्याकरण में दस काल और अवस्थायें होते हैं, इन्हें लकार कहा जाता है। इनमें से एक वर्तमान के लिए (लट्) तीन भूत के लिए (लङ्, लुङ्, लिट्) तीन भविष्यत् के लिए (लृट्, लुट्, लृङ्) एक आज्ञा के लिए (लोट्) और एक विधि और आशीष के लिए (लिङ्) होते हैं। एक काल (लकार) लेट् केवल वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त होता है।

लट् वर्तमाने लेट् वेदे भूते लुङ् लङ् लिटस्तथा ।
विध्याशिषोस्तु लिङ्लोटौ लुट् लृट् लृङ् च भविष्यति ॥

किन्तु प्रारम्भिक व्यवहारिक प्रयोग के लिए पाँच लकार जिनका अभ्यास पूर्व पाठों में कराया गया है, पर्याप्त हैं।

दशमः दिवसः

णिजन्त (प्रेरणार्थक) धातुओं का प्रयोग

लट् लकार वर्तमान काल, एक वचन में।

स्वामी कार्यं कारयति। स्वामी कार्य कराता है।
गुरुः पाठं पाठयति। गुरु पाठ पढ़ाता है।
मोहनः गीतं श्रावयति। मोहन गीत सुनवाता है।
माता शिशुम् चन्द्रम् दर्शयति। माता बच्चे को चन्द्रमा दिखाती है।
माता दुग्धं पाययति। माता दूध पिलाती है।
सेवकः मूर्तिम् स्थापयति। सेवक मूर्ति रखवाता है।
शीला पत्रं लेखयति। शीला पत्र लिखवाती है।

अभ्यास–

स्वामी किं कारयति ? गुरुः कं पाठयति ? किं श्रावयति मोहनः ? माता कं दर्शयति ? किं पाययति माता ? किं लेखयति शीला ?

प्रेरणार्थक कृ धातु (कारि)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कारयति	कारयतः	कारयन्ति
कारयसि	कारयथः	कारयथ
कारयामि	कारयावः	कारयामः

णिजन्त आज्ञार्थक लोट् लकार में

स्वामी कार्यं कारयतु। स्वामी कार्य करवायें।
अध्यापकः छात्रान् पाठयतु। अध्यापक छात्रों को पढ़ायें।
मुनिः भजने कालं गमयतु। मुनि भजन में समय बितावें।
जननी दुग्धं पाययतु। माता दूध पिलाये।
पूजकः भगवन्तं दर्शयतु। भक्त भगवान् को दिखाये।
शीला पत्रं लेखयतु। शीला पत्र लिखावे।
सज्जनः दुर्जनं बोधयतु। सज्जन दुर्जन को समझाये।
भृत्यः कार्यालयम् उद्घाटयतु। नौकर कार्यालय खोलवाये।

अभ्यास—

१. किं कारयतु स्वामी ?
२. कान् पाठयतु अध्यापकः ?
३. मुनिः कुत्र कालं गमयतु ?
४. किं पाययतु जननी ?
५. पूजकः कं दर्शयतु ?
६. किं लेखयतु शीला ?
७. देवदत्तः किं कथयतु ?
८. सज्जनः कं बोधयतु ?
९. कः कार्यालयम् उद्घाटयतु ?

स्मरणीयानि सुभाषितानि

शत्रूनगमयत् स्वर्गं वेदार्थं स्वानवेदयत् ।
आशयच्चामृतं देवान् वेदमध्यापयद् विधिम् ।
आसयत् सलिले पृथिवीं यः स मे श्रीहरिर्गतिः ॥

———

एकादशः दिवसः

आपने तृतीय दिवस के पाठ में बालक, सीता और फल शब्द के रूप पढ़े थे। आइये, आज चार अन्य पुँल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग शब्दों के रूप देखते हैं जिन्हें कण्ठस्थ कर लेने से आपको संस्कृत बोलने और संस्कृत वाक्य बनाने में बहुत सुविधा होगी।

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'नदी' के रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नदी	नद्यौ	नद्यः
नदीम्	,,	नदीः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
नद्यै	,,	नदीभ्यः
नद्याः	,,	,,
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
नद्याम्	,,	नदीषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इसी प्रकार जननी, सती, सावित्री, देवी पृथिवी आदि के रूप होंगे।

इकारान्त पुंलिंग शब्द 'कवि' के रूप

कविः	कवी	कवयः
कविम्	कवी	कवीन्
कविना	कविभ्याम्	कविभिः
कवये	,,	कविभ्यः
कवेः	,,	,,
कवेः	कव्योः	कवीनाम्
कवौ	कव्योः	कविषु
हे कवे	हे कवी	हे कवयः

इसी प्रकार मुनि, हरि, कपि, यति आदि के रूप होंगे।

पुंल्लिग उकारान्त शब्द 'गुरु' के रूप

एकवचन	द्विबचन	बहुवचन
गुरुः	गुरू	गुरवः
गुरुम्	गुरू	गुरून्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
गुरवे	"	गुरुभ्यः
गुरोः	"	"
गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

नपुंसकलिंग पयस् (पानी या दुग्ध) शब्द का रूप

पयः	पयसी	पयांसि
पयः	पयसी	"
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
पयसे	"	पयोभ्यः
पयसः	"	"
पयसः	पयसोः	पयसाम्
पयसि	"	पयस्सु
हे पयः	हे पयसी	से पयांसि

इसी प्रकार मनस्, सरस्, वचस्, चेतस् आदि नपुंसकलिंग शब्दों के रूप होंगे।

द्वादशः दिवसः

विशेष्य और विशेषण प्रकरण

संस्कृत वाक्य-रचना में किसी भी संज्ञा या सर्वनाम का विशेषण उस संज्ञा और सर्वनाम के अनुरूप ही होता है। अर्थात् विशेषण में लगाई जाने वाली विभक्ति, और उसके लिंग वचन वही होंगे जो विशेष्य के होंगे। विशेषण विभक्ति, लिंग और वचन के मामले में पूर्णतः अपने विशेष्य के अधीन है। उसके विपरीत नहीं हो सकता। यदि विशेष्य स्त्रीलिंग में है तो विशेषण भी स्त्रीलिंग में ही होगा। नपुंसक या पुंल्लिग में नहीं हो सकता है। उसी प्रकार यदि विशेष्य बहुवचन में है तो विशेषण को बहुवचन में रखना होगा। अपि च विशेषण में वही विभक्ति लगाई जायेगी जो विशेष्य में होगी।

उदाहरण–

सुन्दरोऽयं बालकः।
सुन्दरीयं सृष्टिः।
सुन्दरम् इदम् पुष्पम्।
कुलीनः बालकः।
शूरः सैनिकः।
अलोभी ब्राह्मणः।
धीरः नायकः।
कृतज्ञः नरः।
घृतरहितं भोजनम्।
स्वादुहीनं भोजनम्।
पीतम् वस्त्रम्।
नीलं गगनम्।
अमितम् सुखम्।

कुलीना स्त्री।
शीलवती गृहिणी।
सुलक्षणा कन्या।
धीरा नायिका।
कृतज्ञा नारी।

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

दधि मधुरं मधु मधुरं, द्राक्षा सिताऽपि मधुरैव ।
तस्य तदेव हि मधुरं, यस्य मनो यत्र संलगति ।।

: २ :

नवं वस्त्रं नवं छत्रं, नव्या स्त्री नूतनं गृहम् ।
सर्वत्र नूतनं शस्तं सेवकस्तु पुरातनः ।।

: ३ :

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः ।
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते ।।

विशेष्य और विशेषण के सामंजस्य के विषय में स्थूल नियम यही है कि विशेष्य का जो भी वचन, लिंग और विभक्ति होगी, वही वचन, लिंग और विभक्ति विशेषण की होगी ।

किन्तु जब एक ही विशेषण एकाधिक विशेष्यों में लगा हुआ हो तो वह प्रायः निकटतम विशेष्य का अनुसरण करता है । जैसे—

यस्य च वीर्येण कृतिनः वयं च भुवनानि च ।

पुनश्च कई विशेष्यों के होने पर विशेषण उन विशेष्यों के संयुक्त वचन के अनुसार रखा जाता है जैसे—

वीरौ रामलक्ष्मणौ ।
आज्ञाकारिणः रामः श्यामः लक्ष्मणः ।

यदि विशेष्य पुँलिंग और स्त्रीलिंग में हो तो विशेषण पुँलिंग में रखा जाता है और यदि विशेष्य पुं०, स्त्री० और नपुं० लिंग में हो तो विशेषण नपुं० लिंग होता है जैसे—

पक्षपातिनौ अनयोः अहं देवी च ।

यद् वचनं यल्लिंगं, या च विभक्तिः विशेष्यस्य ।
तद् वचनं तल्लिंगं, सा च विभक्तिः विशेषणस्यापि ।।

त्रयोदश: दिवस:

अव्यय प्रकरण

संस्कृत में सामान्यतः संज्ञा, सर्वनाम और क्रियाओं के रूप चलाये जाते हैं और वचन, लिंग तथा विभक्ति के अनुसार संज्ञाओं और सर्वनामों में और उनके विशेषणों में परिवर्तन हो जाता है। क्रियाओं के भी भूत, वर्तमान, भविष्यत् आदि भिन्न-भिन्न कालों में अर्थात् भिन्न-भिन्न लकारों में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन तथा प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष में रूप चलते हैं। किन्तु संस्कृत भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता है और न उनके कोई रूप चलते हैं। इन शब्दों को अव्यय कहते हैं: अव्यय को इस प्रकार परिभाषित किया गया है :—

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

प्रायः प्रयुक्त होने वाले अव्ययों की नामावली इस प्रकार है :—

इदानीम्, अधुना, सम्प्रति	इस समय	अत्र	यहां
		तत्र	वहां
यदा	जब	कुत्र	कहाँ
कदा,	कब	यत्र	जहाँ
सदा, सर्वदा	हमेशा	सर्वत्र	सब जगह
एकदा	एक समय	इतः	यहाँ से
यावत्	जबतक	ततः	वहाँ से
तावत्	तबतक	यतः	क्योंकि, जहाँ से
अद्यावधि	आजतक	इतस्ततः	इधर-उधर
अद्य	आज	पुरस्तात्	सामने
श्वः	आने वाला कल	अधः	नीचे
ह्यः	बीता हुआ कल	पुरः	सामने
परश्वः	परसों	बहिः	बाहर
शीघ्रम्	जल्दी	अन्तः	अन्दर
शनैःशनैः	धीरे-धीरे		

स्वीकृति सूचक अव्यय

आम्	हाँ	पुनः पुनः	बार-बार
ओम्	हाँ	भूयो भूयः	बार-बार
बाढम्	बहुत अच्छा	युगपत्	एक साथ
अथ किम् ?	और क्या ?	सकृत्	एक बार
		पुरा	पहले या प्राचीन काल में

निषेध सूचक अव्यय

न	नहीं	प्राक्	पुराने समय में
नो	नहीं	पश्चात्	पीछे, बाद में
नहि	नहीं	अनन्तरम्	" "
मा	मत	प्रातः	सुबह
अलम्	बहुत हो गया, बस	सायम्	शाम

परिणाम सूचक अव्यय

ईषत् स्तोक	थोड़ा सा	मनाक्	थोड़ा सा

समुच्चय सूचक अव्यय अथवा वाक्यों को जोड़ने वाले

च	और	अपि	भी
वा	या	अथवा	या
प्रत्युत	बल्कि		
यत्	कि	यदि	अगर
चेत्	अगर	यद्यपि	अगरचे
यतः	क्योंकि	अतः	इसलिए
परन्तु, किन्तु	लेकिन		

प्रकार सूचक अव्यय

इत्थम्	ऐसे, इस प्रकार	मुधा	व्यर्थ
एवम्	ऐसे	अकस्मात्	अचानक
यथा	जैसे	तथा	वैसे
अन्यथा	नहीं तो	प्रायः	अक्सर
मिथः	परस्पर	अवश्यम्	जरूर
स्वयम्	स्वयं (खुद)	सम्यक्	भलीभांति
मन्दम्	धीरे-धीरे	वृथा	व्यर्थ

संस्कृत	हिन्दी
इदानीं छात्राः गृहं गच्छन्तु ।	इस समय छात्र घर जायें ।
कदा तव विवाहः भविता ।	कब तुम्हारा विवाह होगा ।
यदा मम इच्छा भविष्यति ।	जब मेरी इच्छा होगी ।
यावत् त्वं दुग्धं पिबसि तावत् अहं भोजनं करोमि ।	जब तक तुम दूध पी रहे हो तब तक मैं भोजन कर रहा हूँ ।
अद्यावधि कोऽपि छात्रः विद्यालयं न आगच्छत् ।	आज तक कोई छात्र विद्यालय नहीं आया ।
शनैः शनैः मोहनः तरति ।	धीरे-धीरे मोहन तैरता है ।
श्वः परीक्षा भविष्यति ।	कल परीक्षा होगी ।
ह्यः मीरा गीतं अगायत् ।	कल मीरा ने गीत गाया था ।
लिपिकः पुनः पुनः टंकणं करोति ।	लिपिक बार-बार टाइप करता है ।
यत्र रामः गच्छति तत्र लक्ष्मणोऽपि गच्छति ।	जहां राम जाता है वहां लक्ष्मण भी जाता है ।
सर्वत्र मेघाः वर्षन्ति ।	सब जगह मेघ बरस रहे हैं ।
प्रातः स्नानं कुरु ।	प्रातः स्नान करो ।
सायम् अध्ययनं कुरु ।	सायं अध्ययन करो ।
पुरः वृक्षः अस्ति ।	सामने वृक्ष है ।
बहिः मा गच्छ ।	बाहर मत जाओ ।

अभ्यास—

...... उल्कामुखो नाम राजा बभूव ।	ईश्वरः ...... विद्यमानः ।
...... श्यामः नगरं गमिष्यति ।	असत्यं ...... वद ।
...... पवनः चलति ।	...... मंगलवारः ...... गुरुवारः ।
...... पाठं पठ ।	त्वं ...... न पठिष्यसि ...... अनुत्तीर्णा भविष्यति ।
मीरा ...... रटति ।	मेघाः ...... वर्षन्ति ।
त्वं ...... उत्तिष्ठ ।	...... रामः न गच्छति ।
मोहन ...... वसति ।	...... अहं अपि न गमिष्यामि ।
तव परीक्षा ...... भविष्यति ।	...... कार्यं किं भविष्यति विषादेन ।

(स्मरणीयानि सुभाषितानि)

: १ :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता)

: २ :

तावद् भया हिद् भेतव्यं यावद् भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं वीक्ष्य नरः कुर्याद् यथोचितम् ॥

(हितोपदेश)

———

चतुर्दशः दिवसः

उपसर्ग प्रकरण

संस्कृत भाषा में उपसर्ग का बड़ा महत्त्व है। संस्कृत के विद्यार्थी के लिये उपसर्ग की शक्ति और उसकी उपादेयता का ज्ञान परम आवश्यक है।

संस्कृत में प्र, परा, अप सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ये २२ उपसर्ग हैं। ये उपसर्ग क्रिया के पहले जुड़ते हैं और जुड़ने पर प्रायः क्रिया का अर्थ बिल्कुल बदल देते हैं। कभी-कभी वे समीपस्थ पद को विशेष बल प्रदान करते हैं।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

'हृ' धातु को लीजिये, जिसका हरण के अर्थ में प्रयोग होता है। भिन्न-भिन्न उपसर्गों के जुड़ जाने पर इसके अर्थ कैसे-कैसे बदले जाते हैं, यह पूर्वोक्त श्लोक में बताया गया है। प्र उपसर्ग से जुड़ने पर हार का प्रहार बन जाता है। वि उपसर्ग से जुड़ने पर विहार, सं उपसर्ग से संहार, आ उपसर्ग से आहार, परि उपसर्ग से परिहार, ऐसे-ऐसे विचित्र और आमूल अर्थ-परिवर्तन होते हैं।

'भू' धातु उपसर्ग रहित रूप में 'होना' अर्थ व्यक्त करती है। उपसर्ग लगने पर उसके अर्थों में कैसे-कैसे विचित्र परिवर्तन होते हैं, देखिये —

प्र + भू प्रभवति।	समर्थ होता है, प्रकट होता है।
परा + भू पराभवति।	पराजित होता है।
सं + भू संभवति।	संभव होता है।
उद् + भू उद्भवति।	उत्पन्न होता है।
अनु + भू अनुभवति।	अनुभव करता है।

इसी प्रकार 'चर्' धातु में-

वि उपसर्ग लगने से	विचरति
उत् उपसर्ग लगने से	उच्चरति
अनु उपसर्ग लगने से	अनुचरति
परि उपसर्ग लगने से	परिचरति
आ उपसर्ग लगने से	आचरति
वि + अभि उपसर्ग लगने से	व्यभिचरति

ऐसे-ऐसे विभिन्न अर्थों वाली क्रियायें बनती हैं।

पंचदशः दिवसः

कारक प्रकरण – प्रथमा विभक्ति

कर्ता कारक के लिये प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे—रामः गच्छति।

सीता पठति।

इसके अतिरिक्त 'प्रातिपदिकार्थलिंग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा'। अर्थात् किसी प्रातिपदिक (मूल शब्द जो धातु या प्रत्यय न हो और अर्थवान् हो) के अर्थ मात्र का बोध कराने या लिंग-परिमाण या वचन मात्र बताने के लिए प्रथमा का प्रयोग होता है।

कारक प्रकरण – द्वितीया विभक्ति

स्थूल रूप से कर्मकारक में द्वितीया लगती है। 'कर्मणि-द्वितीया'

जैसे—रामः पाठं पठति।

गीता पत्रं लिखति।

कर्म क्या है। पाणिनि की परिभाषा के अनुसार 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' किसी वाक्य के प्रयोग किये गये शब्दों में जिसको कर्ता सबसे अधिक चाहता है, वह कर्म है, पर कुछ अन्य स्थितियों में भी द्वितीया का प्रयोग होता है, जो नीचे अंकित है—

१—काल और दूरी की सततता (Continuity) प्रकट करने के लिये

सूत्र—'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे'।

क्रोशं कुटिला नदी। नदी एक कोश तक टेढ़ी है।

त्रीणि दिनानि न्यवसत् काश्याम्। वह तीन दिन काशी में रहा।

२—शी, स्था, आस् धातुओं में अधि उपसर्ग के लगने पर-पर्यंकमधिशेते।

ग्रामम् अधितिष्ठिति।

वैकुण्ठमध्यास्ते हरिः।

सूत्र—'अधिशीङ्स्थासां कर्म'।

३—अभि और नि उपसर्ग के साथ विश् धातु का प्रयोग होने पर गृहमभिनिविशते ।

सूत्र —'अभिनिविशश्च' ।

४—उप और अनु उपसर्ग के साथ वस् धातु का प्रयोग होने पर स ग्रामं उपवसति/अनुवसति ।

सूत्र—'उपान्वध्याङ्वसः' ।

५—परितः, अभितः, समया, निकषा, हा, धिक्, प्रति, अन्तरा, अन्तरेण के साथ—ग्रामं परितः/अभितः सरः । धिक् कुरुपतिम् ।

हरिमन्तरेण न सुखम् ।

ग्रामं निकषा उद्यानम् ।

वार्तिक-अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि

सूत्र—'अन्तराऽन्तरेण युक्ते' ।

सुभाषितम्

अंगनामंगनामन्तरा माधवो
माधवं माधवं चान्तरेणांगना ।
इत्थमाकल्पिते मण्डले मध्यमः
संजगौ वेणुना देवकीनन्दनः ।।

(श्रीकृष्णकर्णामृतम्)

———

षोडशः दिवसः

कारक प्रकरण (तृतीया विभक्ति)

१. तृतीया का प्रयोग सामान्यतः करण के लिए किया जाता है अर्थात् जिस साधन और उपकरण से क्रिया सम्पन्न होती है, उसमें तृतीया लगाई जाती है। जैसे—

रामः बाणेन रावणं हतवान्।
भीमः गदया दुर्योधनं अवधीत्॥
सा लेखन्या लिखति।

क्रिया की सिद्धि में सर्वाधिक सहायक 'करण' होता है 'साधकतमं करणम्'। जैसे—चक्षुषा वृक्षं पश्यति। नेत्र से वृक्ष को देखता है।

यहां देखने की क्रिया में सर्वाधिक सहायक चक्षु है। अतः चक्षु में करण कारक में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त हुई।

उदाहरण—हस्तेन पत्रं लिखति।
नासिकया पुष्पं जिघ्रति।
अंगुल्या मार्गं दर्शयति॥

कर्तृवाच्य में केवल करण में तृतीया होती है और कर्मवाच्य में कर्ता और करण दोनों में तृतीया होती है।

सूत्र—'कर्तृकरणयोस्तृतीया'।

कर्तृवाच्य

रामेण बाणेन रावणः हतः।
भीमेन गदया दुर्योधनः मारितः॥
कृष्णेन चक्रेण जरासन्धः खण्डितः।

२. इसके अतिरिक्त कुछ अन्य स्थितियों में भी तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जहां पर दो व्यक्ति या वस्तुयें एक साथ किसी कार्य का सम्पादन करती हैं वहां दोनों में से गौण [अप्रधान व्यक्ति] वस्तु में तृतीया लगाकर वाक्य-रचना की जाती है।

सूत्र—'सहयुक्तऽप्रधाने'।

सह या उसके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होने पर अप्रधान में तृतीया विभक्ति लगायी जाती है। जैसे-पुत्रेण सह आगतः पिता। पुत्र के

साथ पिता आया। यहां प्रधान कर्ता पिता है और अप्रधान पुत्र साथ देने वाला है। अतः पुत्र में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे –

रामः लक्ष्मणेन सह वनम् अगच्छत्।
माता पुत्र्या सार्धम् खेलति ॥
देवदत्तः भ्रात्रा साकम् मन्दिरं गच्छति।

३. जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी का विकार लक्षित हो, उस (अंगवाची शब्द) में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—'अक्ष्णा काणः' आंख का काना है।

उदाहरण--

सोहनः पादेन खंजः।
शीला कर्णाभ्याम् वधिरा अस्ति ॥
तत्र कर्णैः वधिराः, मुखैः मूकाः शिरसा
खल्वाटाः शरीरेण च वामनाः निवसन्ति।
सूत्र–'येनाङ्गविकारः'।

४. लक्षण ज्ञापक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है अर्थात् जब किसी विशेष लक्षण या चिह्न के द्वारा किसी को जाना जाये तो ज्ञापक (चिह्न) में तृतीया विभक्ति होती है जैसे—'जटाभिः तापसः' (जटाओं से तपस्वी ज्ञात हुआ) यहां जटा चिह्न से तपस्वी का ज्ञान हुआ।

सूत्र–'इत्थंभूतलक्षणे'।

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

दानमात्मीयहस्तेन मातृहस्तेन भोजनम्।
तिलकं विप्रहस्तेन परहस्तेन मर्दनम् ॥

: २ :

नागो भाति मदेन कं जलरुहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो, नित्योत्सवैर्मन्दिरम्।
वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनैर्नद्यः सभा पण्डितैः
सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा, लोकत्रयं विष्णुना ॥

: ३ :

पयसा कमलं कमलेन पयः पयसा कमलेन विभाति सरः

मणिना वलयं वलयेन मणिर्मणिना वलयेन विभाति करः।

शशिना च निशा निशया च शशी शशिना निशया च विभाति नभः

भवता च सभा सभया च भवान्, भवता सभया च सदस्यगणः॥

: ४ :

दानेन पाणिर्न तु कंकणेन स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन।

मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मण्डनेन॥

: ५ :

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।

ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान्॥

सप्तदशः दिवसः

संस्कृत में देने हेतु दा धातु प्रयुक्त होती हैं। जब किसी को कोई वस्तु दी जाय तो जिसे दी जाय, उस व्यक्ति के नाम में चतुर्थी विभक्ति लगती है। सूत्र है—'चतुर्थी सम्प्रदाने'

उदाहरण—

राजा विप्राय गां ददाति।
गृहस्थः भिक्षुकाय अन्नं ददाति॥
निर्धनाय धनं देहि।

२. 'रुचि' अर्थ सूचक धातुओं के योग में प्रीयमाण (सन्तुष्ट होने वाले) के साथ चतुर्थी विभक्ति लगती है।

उदाहरण—

हरये रोचते भक्तिः
देवदत्ताय मोदकाः रोचन्ते।
मार्जाराय दुग्धं रोचते।

३. क्रुध, द्रुह, ईर्ष्या, असूया तथा समानार्थक धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति क्रोध, ईर्ष्या आदि की जाय, उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है।

सूत्र–'क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः'।

उदाहरणः—

रावणः रामाय क्रुध्यति।
कंसः कृष्णाय द्रुह्यति।
प्रतिवेशी मोहनः सोहनाय ईर्ष्यति।
मम सहकर्मी मह्यम् असूयति।

४. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं और वषट् के योग में चतुर्थी होती है।

सूत्र–'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च'।

उदाहरणः—

वासुदेवाय नमः।
गणेशाय नमः। देव्यै नमः।

प्रजाभ्यः स्वस्ति ।
अग्नये स्वाहा ।
पितृभ्यः स्वधा ।
मलं मल्लो मल्लाय ।
इन्द्राय वषट् ।

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

(सुभाषितसंग्रह)

: २ :

दानाय लक्ष्मीः सुकृताय विद्या, चिन्ता परब्रह्मविनिश्चयाय ।
परोपकाराय वचांसि यस्य, वन्द्यस्त्रिलोकीतिलकः स एव ॥

(शार्ङ्गधरपद्धति)

: ३ :

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥

अष्टादशः दिवसः

कारक प्रकरण – पंचमी विभक्ति

१. स्थूल रूप से अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। ध्रुव को अपादान कहते हैं। ध्रुव वह है जिससे कोई व्यक्ति या वस्तु अलग हो रही हो।

सूत्र–'ध्रुवमपायेऽपादानम्'। 'अपादाने पंचमी'।

जैसे—वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

रामः गृहात् बहिर्गच्छति।

२. जुगुप्सा, विराम, प्रमाद अर्थवाले शब्दों के साथ पंचमी का प्रयोग होता है।

स पापात् जुगुप्सते।

सा अध्ययनात् प्रमाद्यते। स्वाधिकारात् प्रमत्तः।

कार्यात् विरमति।

सूत्र–'जुगुप्साविरामप्रसादार्थानामुपसंख्यानम्'।

३. जिससे भय हो या जिससे रक्षा करनी हो, उसमें पंचमी लगती है।

सर्पात् बिभेमि। चोराद भयम्। दुःशासनात् रक्ष माम् कृष्ण!

सूत्र–'भीत्रार्थानां भयहेतुः।

४. जिस वस्तु या कार्य से किसी को रोका जाय, उसमें पंचमी लगाकर रोकने का भाव व्यक्त किया जाता है।

मित्रं पापात् निवारयति। यवेभ्यः गां वारयति।

सूत्र–'वारणार्थानामीप्सितः'।

५. जिससे कोई छिपना चाहता है, उसमें पंचमी लगती है।

मातुर्निलीयते कृष्णः।

सूत्र–'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति'।

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

लोभात् क्रोधः प्रभवति, लोभात् कामः प्रजायते ।
लोभो मोहश्च नाशाय, लोभः पापस्य कारणम् ॥

: २ :

आलापाद् गात्रसम्पर्कात् संसर्गात् सहभोजनात् ।
आसनाच्छयनाद् यानात्, पापं संक्रमते नृणाम् ॥

: ३ :

संगात् संजायते कामः, कामात् क्रोधोऽभिजायते ।
क्रोधाद् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृतिविभ्रमः ॥
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥

एकोनविंशः दिवसः

कारक प्रकरण – षष्ठी विभक्ति

षष्ठी विभक्ति सम्बन्ध कारक का सूचक है। जहां दो व्यक्तियों या वस्तुओं में सम्बन्ध या स्वामित्व सूचित करना अभिप्रेत हो, वहां षष्ठी का प्रयोग होता है।

दशरथस्य पुत्रः रामः। रामस्य अनुजः लक्ष्मणः।
मातुः आज्ञा। पितुः चरणौ।
राज्ञा सैनिकाः।

२. जब वाक्य में कारण या उद्देश्य दिखाने के लिए 'हेतु' शब्द का प्रयोग हो तो हेतु शब्द में और उद्देश्य में षष्ठी लगती है। जैसे—

१. रोदिषिकस्य हेतोः।
२. अन्नस्य हेतोः भिक्षुकः ग्रामे वसति।

सूत्र—'षष्ठी हेतुप्रयोगे'

३. जहां तुलना या सादृश्य सूचित करना हो वहां जिससे तुलना या सादृश्य किया जाय उसमें तृतीया या षष्ठी होती है जैसे—

१–कृष्णस्य कृष्णेन वा तुल्यः योगी भोगी च दुर्लभः।
२–भरतस्य सदृशः भ्राता न अभूत्।

४. जब सर्वनाम के साथ हेतु शब्द का प्रयोग हो तो तृतीया या षष्ठी प्रयुक्त होती है।

केन हेतुना अथवा कस्य हेतोः।

सूत्र—सर्वनामस्तृतीया च।

५. कृत् प्रत्ययों से बनी हुई संज्ञाओं के साथ कर्ता और कर्म में षष्ठी प्रयुक्त होती है।

कृष्णस्य कृतिः। जगतः कर्ता।

सूत्र—'कर्तृकर्मणाः कृति'

६. 'क्त' प्रत्यय से बने हुये भूत कालिक कृदन्त विशेषण जब वर्तमान के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं तो षष्ठी आती है।

राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा।

सूत्र–'क्तस्य च वर्तमाने'

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किं प्रयोजनम् ।।

(सुभाषितरत्नभण्डागार)

: २ :

दुर्बलस्य बलं राजा, बालानां रोदनं बलम् ।
बलं मूर्खस्य मौनित्वं, चौराणामनृतं बलम् ।।

(चाणक्यशतक)

: ३ :

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ।।

(सुभाषितरत्नभण्डागार)

: ४ :

ताराणां भूषणं चन्द्रो, नारीणां भूषणं पतिः ।
पृथिव्या भूषणं राजा, विद्या सर्वस्य भूषणम् ।।

(चाणक्यशतकम्)।

: ५ :

विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः ।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः ।।

: ६ :

अर्थातुराणां न पिता न बन्धुः, कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
चिन्तातुराणां न सुखं न निद्रा, क्षुधातुराणां न बलं न तेजः ।।

विंशः दिवसः

कारक प्रकरण – सप्तमी विभक्ति

१. अधिकरण कारक में अर्थात् मुख्यतः 'में' और 'पर' की स्थिति को व्यक्त करने हेतु सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

यह 'में' और 'पर' का आधार सम्बन्ध व्यक्ति अथवा विषय अथवा वस्तु में हो सकता है।

महिषी पर्यङ्के शेते।	रानी पर्यंक (पलंग) पर सोती है।
मोहनः गुरुकुले वसति।	मोहन गुरुकुल में रहता है।
राजा गजे तिष्ठति।	राजा हाथी पर बैठता है।
त्वं आसने उपविश।	तुम आसन पर बैठो।
कपयः वृक्षेषु धावन्ति।	बन्दर वृक्षों पर दौड़ते हैं।
रामस्य मोक्षे इच्छा अस्ति।	राम की मोक्ष में इच्छा है।
अध्यापकः गणितपाठने तत्परः अस्ति।	अध्यापक गणित पठाने में तत्पर है।
व्याकरणे तस्य रुचिः नास्ति।	व्याकरण में उसकी रुचि नहीं है।
तिलेषु तैलं भवति।	तिलों में तेल होता है।
तप्ते लौहगोलके अग्निः अस्ति।	तपे हुए लोहे के गोले में अग्नि है।
दुग्धे घृतमस्ति।	दूध में घी है।
पुष्पे सुगन्धिः वसति।	फूल में सुगन्धि रहती है।

२. जहां किसी समूह में किसी जनविशेष को पृथक् करना हो, वहां उस समूह में सप्तमी या षष्ठी लगाई जाती है।

गोषु कृष्णा बहुक्षीरा। अथवा गवां कृष्णा बहुक्षीरा।	गायों में कृष्ण (काली) गाय अधिक दूध देती है।
गोपेषु कृष्णः श्रेष्ठः। अथवा गोपानां कृष्णः श्रेष्ठः।	ग्वालों में कृष्ण श्रेष्ठ है।
सर्वेषु बालकेषु रामः बलिष्ठः। अथवा सर्वेषां बालकानां रामः बलिष्ठः।	सभी बालकों में राम बलिष्ठ हैं।

३. ऐसी संज्ञा या सर्वनाम में सप्तमी होती है जिसकी की हुई क्रिया दूसरी क्रिया का समय सूचित करें।

गोषु दुह्यमानासु गतः देवदत्तः।	गाय दुही जा रही थी तब देवदत्त गया।
गृहस्थे सुप्ते चौरः गृहे प्राविशत्।	गृहस्थ के जाने पर चोर घर में घुसा।
अध्यापके गते छात्राः अपलायन्।	अध्यापक के जाने पर छात्र भाग गये।

स्मरणीयाः श्लोकाः

: १ :

उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षेशत्रुसंकटे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥

लक्ष्मीः कुत्र वसति ?
शरशफायां शयानं भीष्मपितामहं युधिष्ठरः पृष्टवान्

: २ :

कीदशे पुरुषे तात स्त्रीषु वा पुरुषर्षभ।
श्रीः पद्यां वसते नित्यं तन्मे ब्रूहि पितामह॥

लक्ष्मीः स्वयं वदति--

: ३ :

वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे, दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे, जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्वे॥

: ४ :

नाकर्मशीले, पुरुषे वसामि, न नास्तिके सांकरिके कृतघ्ने।
न भिन्नवृत्ते न नृशंसवर्णे, न चापि चौरे न गुरुष्वसूये॥

: ५ :

सत्यासु नित्यं प्रियदर्शनासु, सौभाग्ययुक्तासु विभूषितासु।
वसामि नारीषु पतिव्रतासु, कल्याणशीलासु विभूषितासु॥

: ६ :

नदीषु हंसस्वननादितासु, तपस्विसिद्धद्विजसेवितासु।
मत्ते गजे गोवृषभे नरेन्द्रे, सिंहासने सत्पुरुषे च नित्यम्॥

: ७ :

शैले शले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे-गजे।
साधवा नहि सर्वत्र, चन्दनं न वने-वने॥

(चाणक्यशतक)

: ८ :

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति ॥
(चाणक्यशतक)

: ९ :

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुंजरम् ।
केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः ॥

: १० :

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्टवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः ॥
(चाणक्यशतक)

: ११ :

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ॥
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं ।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

———

एकविंशः दिवसः

सन्धि (संहिता) प्रकरण

सन्धि की प्रक्रिया संस्कृत भाषा की एक अनूठी विशेषता है जो उसे लालित्य और लचीला पद प्रदान करता है। हिन्दी भाषी जन सन्धि प्रकरण से परिचित है। हिन्दी व्याकरण की सन्धियां यथावत् संस्कृत से ही ली गयी है अंग्रेजी भाषा में भी सन्धि का एक सीमित स्वरूप दिखाई पड़ता है। जैसे--Iuegal, impossible, megular, inefficient आदि में। उर्दू और फारसी भाषाओं में भी सन्धि के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

मीलादुन्नबी	मीलाद-उल-नबी
अब्दुस्सलाम	अवद-उल-सलाम
नूरूद्दीन	नूर-दल-दीन

पर संस्कृत में पह प्रक्रिया बहुत विकसित है और उच्चस्तर पर पहुँचाई गई है।

समासपदों, उपसर्ग और धातु के संयोग आदि कुछ शब्दों को छोड़कर अन्यत्र सन्धि करना अनिवार्य नहीं है और पूर्णतः बोलने लिखने वाले की इच्छा पर है कि शब्दों में सन्धि करे या न करे।

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ।।

सन्धियों को समझने और सरलतापूर्वक स्मरण करने हेतु शिवसूत्र, इत् और प्रत्याहार को जान लेना उपयोगी है। इस पाठचक्रम के प्रारम्भ में ही शिवसूत्र, इत् एवं प्रत्याहार का ज्ञान कराया गया है। पर उसे पुनः उद्धृत किया जा रहा है।

शिवसूत्र

१. अइउण् २. ऋलृक् ३. एओङ् ४. ऐऔच् ५. हयवरट्
६. लण् ७. ञमङणनम् ८. झभञ् ९. घढधष् १०. जबगडदश्
११. खफछठथचटतव् १२. कपय् १३. शषसर् १४, हल्

इन १४ सूत्रों में ण् क् ङ्, च् ट् आदि अन्तिम हलन्त को इत् कहते हैं। उपर्युक्त सूत्रों के किसी भी अक्षर से किसी भी इत् तक के अक्षरसमूह को प्रत्याहार कहा जाता है।

कुछ प्रत्याहार जो प्रायः व्यवहारिक प्रयोग में आते हैं और सन्धि सूत्रों को समझने के लिये विशेष उपयोगी हैं नीचे उदधृत हैं—

अच्–सारे स्वर वर्ण (अ इ उ ऋ ऌ, ए ओ ऐ औ)

हल्–सारे व्यंजन वर्ण । कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग पवर्ग, य र ल व श ष स ह)

अक्–अ इ उ ऋ ऌ

इक्–इ उ ऋ ऌ

यण्–य् व् र् ल्

एच्–ए ओ ऐ औ

हश्–वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, (अर्थात् सारे मृदु व्यंजन-संख्या १५) अन्तस्थ वर्ण–य् व् र् ल् तथा ह् (२० वर्ण)

जश्–वर्गों के तृतीय वर्ण अर्थात्
ग् ज् ड् ब् द् (जबयडदश्)

खर्–वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण अर्थात क्,ख् च् छ् ट् ठ्, त् थ्, प् फ् और ऊष्म व्यंजन अर्थात श् ष् स् (अर्थात् सारे कठोर व्यंजन संख्या–१३)

यय्-श् ष् स् ह् को छोड़ सभी व्यंजन वर्ण ।

जैसे दो लकड़ी को जोड़ने के लिये उनके किनारों पर चूल काटकर जोड़ा जाता है और थोड़ा सा परिवर्तन काष्ठखण्डों में हो जाता है, उसी प्रकार शब्दों में भी सन्धि के समय शब्दों के किनारों पर कुछ परिवर्तन घटित होता है ।

———

द्वाविंशः दिवसः

स्वर सन्धि—

दीर्घ सन्धि—

अकः सवर्णे दीर्घः

अक् प्रत्याहार अर्थात् अ इ उ ऋ ऌ के सामने सवर्ण अर्थात् वही स्वर आने पर दोनों मिलकर दीर्घ स्वर में बदल जाते हैं जैसे—

तथा	+	अस्तु	=तथास्तु
मम	+	अपि	=ममापि
देव	+	आलयः	=देवालयः
महा	+	आत्मा	=महात्मा
छात्र	+	आवासः	=छात्रावासः
सभा	+	आगारः	=सभागारः
भ्रष्ट	+	आचारः	=भ्रष्टाचारः
कपि	+	इन्द्रः	=कपीन्द्रः
नदी	+	ईशः	=नदीशः
नास्ति	+	इति	=नास्तीति
भानु	+	उदयः	=भानूदयः
लघु	+	ऊर्मिः	=लघूर्मिः

यण् सन्धि

इको यणचि

इक् प्रत्याहार अर्थात् इ, उ, ऋ, ऌ के सम्मुख कोई असमान स्वर आने पर इक् स्वरों को यण् हो जाता है अर्थात् वे क्रमशः य् व् र् ल् में परिवर्तित हो जाते हैं जैसे।

इति	+	आदि	=इत्यादि
यदि	+	अपि	=यद्यपि
आदि	+	अन्त	=आद्यन्त
मनु	+	आदयः	=मन्वादयः
मधु	+	अरिः	=मध्वरिः
पितृ	+	उपदेशः	=पित्रुपदेशः
धातृ	÷	अंशः	=धात्रंशः
मातृ	+	आज्ञा	=मात्राज्ञा

त्रयोविंशः दिवसः

गुण सन्धि

आद् गुणः

अ या आ के सम्मुख इ या ई आने पर दोनों के स्थान पर ए गुण हो जाता है। उ या ऊ आने पर ओ गुण हो जाता है। जैसे—

देव	+	इन्द्रः	=देवेन्द्रः
सुर	+	ईशः	=सुरेशः
रमा	+	ईशः	=रमेशः
तव	+	इदम्	=तवेदम्
उप	+	इन्द्रः	=उपेन्द्रः
महा	+	ईश्वरः	=महेश्वरः
गंगा	+	उदकम्	=गंगोदकम्
वृक	+	उदरः	=वृकोदरः
सर्व	+	उत्तमः	=सर्वोत्तमः
महा	+	उदयः	=महोदयः
सूर्य	+	उदयः	=सूर्योदयः

वृद्धि सन्धि

वृद्धिरेचि

अ या आ के सम्मुख एच् अर्थात् ए ऐ ओ औ आने पर वृद्धि हो जाती है अर्थात् ए या ऐ आने पर दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है और ओ या औ आवे तो औ हो जाता है। जैसे—

तथा	+	एव	=तथैव
मम	+	एतत्	=ममैतत्
अद्य	+	एव	=अद्यैव
सदा	+	एव	=सदैव
हित	+	एषणा	=हितैषणा
महा	+	औषधिः	=महौषधिः
तण्डुल	+	ओदनम्	=तण्डुलौदनम्

———

चतुर्विंशः दिवसः

अयादि सन्धि

एचोऽयवायावः

एच् प्रत्याहार के अक्षरों अर्थात् ए ओ, ऐ, औ के सम्मुख कोई स्वर वर्ण आने पर ए, ओ, ऐ, औ का क्रमशः अय् अव् आय् आव् हो जाता है जैसे—

शे + अनम्	=	शयनम्
ने + अनम्	=	नयनम्
भो + अनम्	=	भवनम्
नै + अकः	=	नायकः
पौ + अकः	=	पावकः
उभौ + अपि	=	उभावपि

एकारस्य अयादेशः स्वरवर्णे परे सति।
ने अनं नयनं रूपं हरे ए हरये नमः।
ऐकारस्य भवेदाय् वै पश्चात् स्वरे समागते।
नै अकः नायकः सोऽस्ति गै अकः गायको भवेत्॥
ओ वर्णस्य अवादेशः औ वर्णस्य आवपि।
भो अनं भवनं रूपं पौ अकः पावकस्तथा॥

नोट—इन सन्धि नियमों के अपवाद (exceptious) भी हैं पर अभी पाठकों को उन उलझनों में डालना अभीष्ट नहीं है।

———

पंचविंशः दिवशः

विसर्ग सन्धि

हशि च–

१. ह्रस्व अ की विसर्ग के उपरान्त अ या प्रत्याहार हश् का कोई वर्ण आये अर्थात् वर्गो के तृतीय, चतुर्थ, या पंचम वर्ण अथवा यर लव ह में से कोई आये तो उ हो जाता है और पूर्व अ तथा विसर्ग के स्थान पर ओ हो जाता है। जैसे–

रामः गच्छति	=	रामो गच्छति
बालकः अयम्	=	बालकोऽयम्
नरः याति	=	नारो याति
कृष्णः हसति	=	कृष्णो हसति

२. ह्रस्व अ की विसर्ग के उपरान्त ह्रस्व अ के अतिरिक्त कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–

नरः आयाति	=	नर आयाति
रामः उत्तिष्ठति	=	राम उत्तिष्ठति
जनः ईर्ष्यति	=	जन ईर्ष्यति
नारदः उवाच	=	नारद उवाच

३. दीर्घ आ और ओ की विसर्ग के वाद कोई स्वर या कोई मृदु व्यंजन आये अर्थात् वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण या य र ल व ह आयें तो बिसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–

बालकः गच्छति	=	बालका गच्छन्ति
मेघाः वर्षन्ति	=	मेघा वर्षन्ति

४. अ और आ के अतिरिक्त किसी भी स्वर की विसर्ग के उपरान्त कोई स्वर वर्गों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण या य र ल व ह आये तो विसर्ग का र हो जाता है। जैसे–

मतिः अस्ति	=	मतिरस्ति
कविः याति	=	कविर्याति
बहिः गमनम्	=	बहिर्गमनम्

एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि

५. सः और एषः की विसर्ग के उपरान्त ह्रस्व अ को छोड़कर कोई भी अक्षर हो, तो विसर्ग का सदैव लोप हो जाता है। जैसे-

सः गच्छति = स गच्छति

एषः जनः = एष जनः

विसर्जनीयस्य सः

६. किसी भी स्वर की विसर्ग के बाद च् छ् श्, ट् ठ् ष् या त् थ् स् आये तो विसर्ग का क्रमशः श्, ष् और स् हो जाता है। जैसे—

गौः चरति = गौश्चरति

धनुः टंकार = धनुष्टंकार

नौः तरति = नौस्तरति

७. किसी भी स्वर की विसर्ग के बाद क् ख् प् और फ् इन चार अक्षरों में से कोई भी होगा तो विसर्ग यथावत् बना रहेगा। जैसे-

बालकः कथयति = बालकः कथयति

वसन्तकाले संप्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः।

षड्विंशः दिवसः

हल सन्धि स्तोः श्चुनाश्चुः

१. यदि पूर्व पद में 'स्' या त वर्गीय अक्षर हो और उत्तर पद में 'श्' या चवर्ग हो तो पूर्वपदीय 'स या त वर्गीय अक्षर 'श' या यथाक्रम (Corespoding) वर्गीय अक्षर में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

हरिस् + शेते = हरिश्शेते
सत् + चित् = सच्चित्
सत् + चिदानन्द = सच्चिदानन्द
सत् + जनः = सज्जनः

'ष्टुना ष्टुः'

२. यदि पूर्व पद में 'स' या त वर्गीय अक्षर हो और उत्तर पद में 'ष्' या ट वर्ग का अक्षर हो तो पूर्व पदीय 'स' या त वर्गीय अक्षर 'ष्' या यथाक्रम ट वर्गीय अक्षर में परिवर्तित हो जाता है: यथा-

रामस् + टीकते = रामष्टीकते
तत् + टीका = तट्टीका

'झलां' जशोऽन्ते

३. पूर्व पद में 'झल्' प्रत्याहार का कोई अक्षर हो अर्थात् वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण हो या श, ष, स, ह, हो और उत्तर पद में कोई भी स्वर या व्यंजन हो तो पूर्व पद का अक्षर अपने वर्ग के तृतीय अक्षर 'जश्' में बदल जाता है।

उदाहरणः—

वाक् + ईशः = वागीशः
सुप् + अन्तः = सुबन्तः
जगत् + ईशः = जगदीशः
चित् + रूपम् = चिद्रूपम्

'खरि च'

४. यदि पूर्व पद में उपर्युक्त 'झल्' प्रत्याहार का कोई अक्षर हो और उत्तर पद में 'खर्' प्रत्याहार का अक्षर हो अर्थात् वर्गों का प्रथम या द्वितीय वर्ण श्, ष्, स् हो तो पूर्व पद के अक्षर के स्थान पर उस वर्ग का प्रथम अक्षर हो जाता है।

उदाहरण—

भेद – तुम् = भेत्तुम्
उत् – स्थानम् = उत्थानम्

सप्तविंशः दिवसः

१. 'तोर्लि'

यदि पूर्व पद में तवर्ग का कोई अक्षर हो और उत्तर पद में 'ल' हो तो तवर्ग का अक्षर 'ल्' में बदल जाता है।

उदाहरण—तत् + लयः =तल्लयः
तत् + लीला =तल्लीला
उद + लेखः =उल्लेखः

२ मोऽनुस्वारः

पूर्व पद के अन्त में 'म्' हो और उत्तर पद में कोई व्यंजन हो तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है।

उदाहरण—हरिम् + वन्दे =हरिं वन्दे
गृहम् + गच्छति =गृहं गच्छति

यदि उत्तर पद में व्यंजन के बजाय स्वर हो तो 'म्' अनुस्वार के रूप में नहीं बदलता। वह उस स्वर वर्ण से मिल जाता है।

उदाहरण—अहम् + अगच्छम् =अहमगच्छम्

३. अनुस्वारस्य यमि परसवर्णः

यदि पूर्व पद में अनुस्वार हो और उत्तर पद में यम् अर्थात् श, ष, स, ह को छोड़कर कोई भी व्यंजन हो तो अनुस्वार के स्थान पर उत्तर पद वाले वर्ण के वर्ग का अन्तिम पंचम अक्षर हो जाता है।

उदाहरण—गं + गा =गङ्गा
अं + कः =अङ्कः
कुं + ठितः =कुण्ठितः
चं + चलः =चञ्चलः

——

अष्टाविंशः दिवसः

समास प्रकरण

समास शब्द का शाब्दिक अर्थ संक्षेप है। समास की योजना संक्षिप्तीकरण की प्रक्रिया है। उर्दू भाषा में भी तत्पुरुष और द्वन्द्व समास दिखाई पड़ते हैं जैसे—काबिले गौर नूरे, चश्म, बादे सबा, गुलो बुलबुल।

संस्कृत भाषा में समास की योजना बहुत ही विकसित है और उसने संस्कृत भाषा को अद्वितीय लालित्य तथा अभिव्यंजना शक्ति प्रदान की है। बाण, दण्डी जैसे समर्थ शिल्पियों के हाथों समासशक्ति ने लालित्य और अभिव्यंजना के उच्चतम शिखर छुये हैं।

जैसे दो अक्षर संस्कृत में सन्धि द्वारा जुड़ जाते हैं, उसी प्रकार दो शब्द या पद समास द्वारा जोड़े और संक्षिप्त बनाये जा सकते हैं।

समास छः प्रकार के हैं : द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव।

द्वन्द्व समास

'चार्थे द्वन्द्व'

च के अर्थ में स्थित उनेक सुबन्तों का जो समास होता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं जैसे—

रामलक्ष्मणौ	– रामः च लक्ष्मणश्च	धमार्थौ	– धर्मः च अर्थश्च
जायापती	– जाया च पतिश्च	हरिहरौ	– हरिश्च हरश्च
सुखदुःखे	– सुखं च दुःखं च	अहिनकुलम्	– अहिश्च नकुलश्च
हंसौ	– हंसी च हंसश्च	पाणिपादम्	– पाणी च पादौ च
पितरौ + माता-पितरौ–माता च पिता च		भ्रातरौ	– भ्राता च स्वसा च
रथश्च–अश्वश्च रथाश्वम्।		शुक्लकृष्णौ	– शुक्लश्च कृष्णश्च

द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है।

१. इतरेतर द्वन्द्व

२. समाहार द्वन्द्व

३. एकशेष द्वन्द्व

इतरेतर द्वन्द्व—जैसे राम लक्ष्मणौ रामश्च लक्ष्मणश्च इतरेतर द्वन्द्व ये पद का वचन संयुक्त वचन होता है और लिंग अन्तिम पद के लिंग के अनुसार रखा जाता है।

जैसे – कुक्कुटश्च मयूरी च कुक्कुटमयूर्यौ
मयूरीश्च कुक्कुटश्च मयूरीकुक्कुटौ

अपवाद – अहश्च रात्रिश्च महोरात्र:

समाहार द्वन्द्व—में समास के पदों का संयुक्त रूप में विचार किया जाता है।

जैसे—पाणिपादम्	– पाणी च पादौ च पाणिपादम्
गंगाशोणम्	– गंगा च शोणश्च गंगाशोणम्
अहिनकुलम्	– अहिश्च नकुलश्च अहिनकुलम्
नक्तंदिवम्	– नक्तं च दिवा च नक्तंदिवम्
स्त्रीपुंसौ	– स्त्री च पुमान च स्त्रीपुंसौ
द्यावापृथिव्यौ	– द्यौश्च पृथिवी च द्यावापृथिव्यौ

एकशेष द्वन्द्व—में अनेक पदों में से समास के बाद एक ही पद शेष रहता है।

जैसे—हंसश्च हंसी च हंसौ
भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ
माता च पिता च पितरौ
पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ

एकोनत्रिंशः दिवसः

तत्पुरुष समास—जहां समास के पदों-पदों में से उत्तर पद प्रधान अर्थात् मुख्य हो और पूर्व पद उससे कोई संबंध रखता हो, वहां समास को तत्पुरुष समास कहते हैं। सामान्यतः दोनों पदों के बीच में द्वितीया से लेकर सप्तमी तक कोई विभक्ति (कारक) छिपी रहती है।

जैसे—

राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	(षष्ठी तत्पुरुष)
राष्ट्रपतिः	राष्ट्रस्य पतिः	(,, ,,)
धर्मक्षेत्रम्	धर्मस्य क्षेत्रम्	(,, ,,)
पर्वतराजः	पर्वतानां राजा	(,, ,,)
कृष्णाश्रितः	कृष्णम् आश्रितः	(द्वितीया तत्पुरुष)
अग्निपतितः	अग्निं पतितः	(,, ,,)
पितृसमः	पित्रा समः	(तृतीया तत्पुरुष)
बाणविद्धः	बाणेन विद्धः	(,, ,,)
विद्याविहीनः	विद्यया विहीनः	(,, ,,)
कल्याणपूजा	कल्याणाय पूजा	(चतुर्थी तत्पुरुष)
भूतवलिः	भूतेभ्यः बलिः	(,, ,,)
रणकुशलः	रणेकुशलः	(सप्तमी तत्पुरुष)
भारतप्रसिद्धः	भारते प्रसिद्धः	(,, ,,)
आतपशुष्कः	आतपे शुष्कः	(,, ,,)

(कुछ विशेष तत्पुरुष)

नञ् तत्पुरुष	अब्राह्मणः—न ब्राह्मणः इति अब्राह्मणः
	अनागतम्—न आगतम् इति अनागतम्
पूर्वकायः	पूर्वं कायस्येति
मध्यान्हः	मध्यम् अह्नः
अर्धचिप्पली	अर्धं चिप्पल्याः
प्राप्तजीविकम्	प्राप्तः जीविकाम्
प्रादि तत्पुरुष [कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः
प्राचार्यः	प्रकृष्टेन आचार्यः

त्रिंश: दिवस:

कर्मधारय समास—कर्मधारय समास वह समास है जिसमें पूर्वपद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है और दोनों पद एक ही विभक्ति में होते हैं।

उदाहरण—

कृष्णसर्प:	– कृष्ण:सर्प: —इस शब्द में कृष्ण विशेषण एवं सर्प विशेष्य है।
नीलोत्पलम्	– नीलं उत्पलम्
महादेव:	– महान् देव:
सत्पुरुष:	– सत् वासो पुरुष:
श्वेतवस्त्रम्	– श्वेतं वस्त्रम्
नवभवनम्	– नवं भवनम्
कुपुरुष:	– कुत्सित: पुरुष:
कदन्नम्	– कुत्सितम् अन्नम्
कृष्णसारंग:	– कृष्ण: सारंग:
घनश्याम:	– घन इव श्याम:
पुरुषव्याघ्र:	– पुरुष: व्याघ्र: इव
मुखकमलम्	– मुखम् कमलमिव

द्विगु समास—संख्यापूर्वो द्विगु:

यदि कर्मधारण समास में प्रथम शब्द संख्यावाची हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं जैसे—षाण्मातुर: त्रिभुवनम् (तीन भवनों का समूह) जब द्विगु समास समूह (समाहार) को व्यक्त करता है तो सदा एक वचन में होता है और नपुंसक लिंग में होता है। जैसे-पञ्चपात्रम्, पञ्चानाम् पात्राणां समाहार: त्रिभुवनम् त्रयाणां भुवनानां समाहार: ।

सूत्र—द्विगुरेकवचनम् । स नपुंसकम् ।

एकत्रिंशः दिवसः

बहुव्रीहि समास—जब समास में आये हुए पद मिल कर किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, या उसके विशेषण के रूप में कार्य करते हैं तो बहुव्रीहि समास होता है। बहुव्रीहि समास में प्रायः इस अन्य व्यक्ति या वस्तु की प्रधानता होती है।

जैसे—पीताम्बरः	– पीतम् अम्बरम् यस्य सः।
नीलकण्ठं	– नीलं कण्ठे यस्य सः।
चन्द्रशेखरः	– चन्द्रः शेखरे यस्य सः।
चक्रपाणिः	– चक्रं पाणौ यस्य सः।
अपुत्रः	– नास्ति पुत्रः यस्य सः।
इन्दुशेखरः	– इन्दुः शेखरे यस्य सः।
दशाननः	– दश आननानि यस्य सः।
महायशाः	– महद्यशः यस्य सः।
गजाननः	– गजस्य आननम् इव आननं यस्य सः।
अगृहीतदारकः	– न गृहीताः दाराः येन सः।
अजिनाषाढधरः	– अजिनं आषाढं च धारयति सः।
धृतदुकूलः	– धृतं दुकूलं येन सः।
चन्द्रानना।	– चन्द्र इव आननं यस्याः सा।
परशुहस्तः	– परशुः हस्ते यस्य सः।
चकितहरिणीप्रेक्षणा	– चकिता हरिणीव प्रेक्षते सा।

बहुव्रीहि समास में अपरिमित शक्ति श्रोत है। संस्कृत साहित्य के महान् शिल्पियों ने बहुव्रीहि का अत्यन्त चमत्कारिक प्रयोग किया है।

अव्ययीभाव समास—

जब किसी अव्यय और संज्ञा पद का संयोग होता है तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें प्रायः पूर्व पद अव्यय होता है और उत्तर पद संज्ञा होता है। समास हो जाने पर पूरा संयुक्त पद नपुंसक-लिंग एक वचन में प्रयुक्त होता है और उसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता। उसके रूप नहीं चलते।

उदाहरण—

यथा शक्ति	—	शक्तिम् अनतिक्रम्य
अनुरूपम्	—	रूपस्य योग्यम्
अनुशिवं	—	शिवस्य पश्चात्
अतिमात्रम्	—	मात्रायाः अत्ययः
दुर्दिनम्	—	दुख्पूर्णम् दिनम्
सशस्त्रम्	—	शस्त्रेण सह
उपनदम्	—	नद्याः समीपम्
अनुक्रमम्	—	क्रमस्य अनुसारेण
उपकृष्णम्	—	कृष्णस्य समीपम्
प्रतिदिनम्	—	दिने दिने प्रतिदिनम्
निर्मक्षिकम्	—	मक्षिकाणाम् अभावः

द्वात्रिंशः दिवसः

प्रत्यय प्रकरण

क्त्वा (त्वा) प्रत्यय (समानकर्तृकयोः पूर्वकाले)

एक ही कर्ता के द्वारा एक ही समय की जा रही दो क्रियाओं में से पूर्वकाल की क्रियावाली धातु में क्त्वा प्रत्यय लगता है। हिन्दी व्याकरण में इसे पूर्वकालिक क्रिया और अंग्रेजी में absolute past कहते हैं। यथा- देवेन्द्र नहाकर खाता है। देवेन्द्रः स्नात्वा खादति। इस वाक्य में देवेन्द्र कर्ता द्वारा दो क्रियाएँ नहाना और खाना की जा रही हैं। इनमें नहाना पूर्वकाल की और खाना उत्तरकाल की क्रिया है। पूर्वकाल की नहाना (स्ना) धातु में क्त्वा प्रत्यय लगाना होगा और "स्नात्वा-शब्द बनेगा। क्त्वा से निर्मित धातुओं के उदाहरण—

धातु	क्त्वा	सामान्य	अर्थ
भू	"	भूत्वा	होकर
कृ	"	कृत्वा	करके
पठ्	"	पठित्वा	पढ़कर
गम्	"	गत्वा	जाकर
नम्	"	नत्वा	प्रणाम करके
स्था	"	स्थित्वा	ठहर कर
पा	"	पीत्वा	पीकर
दा	"	दत्वा	देकर
नी	"	नीत्वा	ले जाकर
वद	"	वदित्वा	बोलकर
लिख	"	लिखित्वा	लिखकर
हस्	"	हसित्वा	हसकर
चल्	"	चलित्वा	चलकर
स्वप्	"	सुप्त्वा	सोकर
ज्ञा	"	ज्ञात्वा	जानकर

ल्यप् (य)

यदि पूर्वकालिक, क्रिया की धातु के पहले कोई उपसर्ग लगा हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय लगता है। जैसे—गम् धातु में क्त्वा प्रत्यय लग कर गत्वा बनता है किन्तु यदि गम् में आ उपसर्ग लगा हो तो क्त्वा के ल्यप् होगा और अगत्वा न होकर आगत्य शब्द बनेगा।

रामः गृहम् आगत्य भोजनमखादत्।

कुछ अन्य उदाहरण—

धातु	क्त्वा	ल्यप्
कृ	कृत्वा	उपकृत्य
गम्	गत्वा	उपगम्य
स्था	स्थित्वा	उत्थाय
पत्	पतित्वा	निपत्य, प्रणिपत्य
दा	दत्वा	आदाय
नी	नीत्वा	आनीय
नम्	नत्वा	प्रणम्य
हस्	हसित्वा	विहस्य
हा	हित्वा	विहाय
हन्	हत्वा	निहत्य
जि	जित्वा	विजित्य

उपकर्तुं प्रियं वक्तुं कर्तुंस्नेहमकृत्रिमम्।
सज्जानानां स्वभावोऽयं, केनेन्दुः शिशिरीकृतः॥

——

त्रयस्त्रिंशः दिवसः

तुमुन् (तुम) प्रत्यय

[तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् समानकर्तृकेषु तुमुन्]

इस प्रत्यय का प्रयोग निमित्त (के लिए) अर्थ में होता है जब कर्ता एक ही हो। राम पढ़ने के लिए जाता है। इस वाक्य में दो क्रियायें हैं पढ़ना और जाना। पढ़ना क्रिया साध्य क्रिया है और जाना क्रिया साधन क्रिया। अर्थात् पठन् क्रिया को सफल करने के लिए गमन् (जाना) क्रिया की जा रही है। ऐसी स्थिति में पठ् धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर पठितुम् रूप बनेगा जिसका अर्थ है पढ़ने के लिए। रामः पठितुम् गच्छति। राम पढ़ने के लिये जाता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द बनाने का सरल उपाय यह है कि जिस धातु का लुट् लकार के प्रथम पुरुष के एक वचन में जो रूप बनता है, वह लें लें, और उसके 'ता' अंश के स्थान पर 'तुम्' लगा दें। बस तुम् प्रत्ययान्त स्वरूप बन गया। यथा—पठ् + लुट् (प्र०पु० एकवचन) पठिता, पठ् + तुमुन्, पठितुम्।

तुमुन्, प्रत्ययान्त धातुओं के उदाहरण—

धातु		तुमुन्	सामान्य रूप	
दृश्	+	तुमुन्	द्रष्टुम	देखने के लिये
भू	+	,,	भवितुम्	होने के लिये
कृ	+	,,	कर्तुम्	करने के लिये
पठ्	+	,,	पठितुम्	पढ़ने के लिये
गम्	+	,,	गन्तुम्	जाने के लिये
गा	+	,,	गातुम्	गाने के लिये
पा	+	,,	पातुम्	पाने के लिये
लिख्	+	,,	लिखितुम्	लिखने के लिये
दा	+	,,	दातुम्	देने के लिये
वच्	+	,,	वक्तुम्	कहने के लिये
भुज्	+	,,	भोक्तुम्	खाने के लिये
ज्ञा	+	,,	ज्ञातुम्	जानने के लिये
स्ना	+	,,	स्नातुम्	स्नान करने के लिये
श्रु	+	,,	श्रोतुम्	सुनने के लिये
स्तु	+	,,	स्तोतुम्	स्तुति करने के लिये
हृ	+	,,	हर्तुम्	हरण करने के लिये
नश्	+	,,	नष्टुम्	नष्ट करने के लिये

चतुस्त्रिंशः दिवसः

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्यय (निष्ठा)

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय धातुओं में जुड़कर मुख्य रूप से वे शब्द बनाते हैं जिन्हें अंग्रेजी में Past particifile कहा जाता है। ये शब्द प्रायः किसी संज्ञा या सर्वनाम के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और विशेष्य के अनुसार पु०, स्त्री० और नपुंसक लिंग में उनके रूप चलते हैं। यथा–

कृ	+ क्त	=	कृत	कृतम् कार्यम्
गम्	+ क्त	=	गत	गतः कालः
पत्	+ क्त	=	पतित	पतितं फलम्
हन्	+ क्त	=	हत	हतः सिंहः
स्वप्	+ क्त	=	सुप्त	सुप्तः शिशुः
जन्	+ क्त	=	जात	जातः पुत्रः
श्रु	+ क्त	=	श्रुत	श्रुतं शास्त्रम्
इष्	+ क्त	=	इष्ट	इष्टो देवः
तुष्	+ क्त	=	तुष्ट	तुष्टो ब्राह्मणः

'क्त' प्रत्यय से जुड़कर धातुओं के कभी-कभी अतीत रोचक शब्द बनाते हैं और हमारे दैनन्दिन व्यवहार में प्रयुक्त होते हैं। यथा—

पृच्छ	+	क्त	=	पृष्ट
लुभ	+	क्त	=	लुब्ध
स्निह्	+	क्त	=	स्निग्ध
शॄ	+	क्त	=	शीर्ण
मुह्	+	क्त	=	मूढ़, मुग्ध
वह्	+	क्त	=	ऊढ
छिद्	+	क्त	=	छिन्न
भिद्	+	क्त	=	भिन्न
भंज्	+	क्त	=	भग्न
दह्	+	क्त	=	दग्ध

'क्त' प्रत्यय से जुड़कर बने हुए शब्द प्रायः विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं और वे अपने विशेष्य के अनुरूप लिंग और वचन धारण कर लेते हैं।

हैं। अपने विशेष्य के भांति पुं० स्त्री० लिंग और नपुं० लिंग में उनके रूप चलते हैं, जैसा ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है।

क्त प्रत्यय से बने हुए शब्दों का एक अन्य प्रयोग भी है। ये शब्द क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त हो सकते हैं, किन्तु सामान्यतः भूतकाल में और कर्म वाच्य में ही। यथा :

बालकेन फलं खादितम्। भुक्तम् वा।

मया कार्यं कृतम्।

छात्रेण पाठः पठितः।

दानेन विप्रः तुष्टः।

बाणेन रावणः मूर्छितः।

कभी-कभी क्त प्रत्यय से निर्मित शब्द सीधे कर्तृवाच्य में भी प्रयुक्त होते हैं। यथा :

रामो गतः।

लक्ष्मणः कुपितः।

वस्त्रम् शीर्णम्।

धनुर्भग्नम्।

क्तवतु प्रत्यय

जैसे क्त प्रत्यय से जुड़कर धातुयें कर्मवाच्च में प्रयुक्त होती हैं, उसी प्रकार क्तवत् प्रत्यय धातु में जुड़कर शब्द बनाते हैं जो कर्तृवाच्च वाक्यों में भूतकालिक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे रामः कार्यम् कृतवान्। इन शब्दों के रूप संज्ञा शब्दों की भांति चलते हैं। पुंल्लिग में भवान् की तरह, स्त्रीलिंग में नदी की तरह और नपुंसकलिंग में महत् की तरह रूप चलते हैं। वाक्य में कर्ता के लिंग और वचन के अनुरूप इन क्तवत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भूतकालिक क्रिया में होते हैं जैसे--

सः भोजनं कृतवान्।

बालकौ पाठं पठितवन्तौ सीता भुक्तवती।

देवदत्तः पत्रं लिखितवान्।

फलं वृक्षात् पतितवत्।

कुछ अन्य उदाहरण

धातु	क्तवतु	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	हिन्दी, अर्थ
श्रु	,,	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्	सुन चुका
कृ	,,	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्	कर चुका
हृ	,,	हृतवान्	हृतवती	हृतवत्	हर चुका
पठ्	,,	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्	पढ़ चुका
गम्	,,	गतवान्	गतवती	गतवत्	जा चुका
ज्ञा	,,	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्	जान चुका
लिख्	,,	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्	लिख चुका
दृश्	,,	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्	देख चुका
कथ्	,,	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्	कहा जा चुका
स्था	,,	स्थितिवान्	स्थितिवती	स्थितवत्	रुक चुका
प्रच्छ	,,	पृष्टवान्	पृष्टवती	पृष्टवत्	पूछ चुका
नी	,,	नीतवान्	नीतवती	नीतवत्	ले जा चुका
पा	,,	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्	पी चुका
मृ	,,	मृतवान्	मृतवती	मृतवत्	मर चुका
वद्	,,	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्	कह चुका

पंचत्रिंश: दिवस:

शतृ प्रत्यय (अत्)

शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से जुड़कर ऐसे शब्द बनाते हैं जो अंग्रेजी में Present participle कहलाते हैं और 'करते हुए', 'जाते हुए' इस प्रकार का अर्थ व्यक्त करते हैं। जब दो कार्य एक ही व्यक्ति के द्वारा एक ही काल में किये जायें तब एक क्रिया में शतृ प्रत्यय के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। यथा—रामोदूरदर्शननं पश्यन् पुस्तकं पठति। राम टी० बी० देखते हुए पुस्तक पढ़ता है। यहाँ देखने और पढ़ने का कार्य एक ही व्यक्ति द्वारा साथ-साथ हो रहा है।

अभ्यास :

शिशुः क्रीड्न् दुग्धं पिबति।	बच्चा खेलाता हुआ दूध पीता है।
नर्तकः नृत्यन् गायति।	नर्तक नाचता हुआ गाता है।
बालिका हसन्ती क्रीडति।	बालिका हँसती हुई खेलती है।
मेघः गर्जन् वर्षति।	मेघ गरजता हुआ बरसता है।
बालकः क्रन्दन् आयाति।	बालक रोता हुआ आता है।

शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुंल्लिग में 'कुर्वन्' की तरह, स्त्रीलिंग में 'नदी' की तरह, और नपुंसकलिंग में 'जगत्' की तरह चलते हैं।

शतृ में केवल अत् शेष रह जाता है। शतृ प्रत्ययान्त शब्द बनाने के लिये किसी भी परस्मैपदी धातु के प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप में से अन्तिम ति को निकाल दें। शेष शब्द पुंल्लिग के प्रथमा का एकवचन शब्द बन गया। जैसे—पठन्ति से ति निकाल कर पठन् शब्द बनता है।

उदाहरण:–

धातु	पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
क्रीड्	कीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
पत्	पतन्	पतन्ती	पतत्
पठ्	पठन्	पठन्ती	पठत्
गम्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
हस्	हसन्	हसन्ती	हसत्
खाद्	खादन्	खादन्ती	खादत्
जीव्	जीवन्	जीवन्ती	जीवत्
कृ	कुर्वन्	कुर्वन्ती	कुर्वत्
दृश्	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
स्था	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्
ज्ञा	जानन्	जानन्ती	जानत्

स्मरणीयानि सुभाषितानि

: १ :

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा प्राप्य च यो नरः ।
न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ।।

: २ :

मानं हित्वा प्रियो नित्यं कामं जित्वा सुखी भवेत् ।
क्रोधं हित्वा निराबाधः तृष्णां जित्वा न तप्यते ।।

: ३ :

न वै किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत् तत्त्ववित् ।
पश्यन् श्रृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन् ।।

: ४ :

खादन् न गच्छामि हसन् न जल्पे ।
गतं न शोचामि कृतं न मन्ये ।।
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन् ।
किं कारणं भोज ! भवामि मूर्खः ।।

शानच् प्रत्यय (आन)

शानच् प्रत्यय आत्मने पदी धातुओं से जुड़कर उसी प्रकार के (Present Particeple) शब्द बनाती है जैसे शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से जुड़कर बनाती है । दोनों का कार्य समान है । शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं में लगती है और शानच आत्मने पदी धातुओं में यथा :—

कम्पमानः वृद्धो मूर्च्छति ।
भाषमाणः नेता उवाच ।
याचमानः भिक्षुकः भूमौ अपतत् ।
म्रियमाणाः रोगिणः रुदन्ति ।
भजमानाः भक्ताः स्तोत्राणि गायन्ति ।

कुछ अन्य उदाहरण—

पुं०	स्त्री०	नपुं० लिंग
त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
यतमानः	यतमाना	यतमानम्
वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
भासमानः	भासमाना	भासमानम्
लभमानः	लभमाना	लभमानम्
मोदमानः	मोदमाना	मोदमानम्

शानच् प्रत्ययान्त शब्द बनाने के लिये आत्मने पदी धातु के वर्तमान् लट् के प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप से 'न्ते' निकाल दे, और जो शेष पद बचे उसमें मान जोड़ दें। यह नया शब्द शानच् प्रत्ययान्त प्रथमा का एक वचन शब्द बन गया। जैसे -- भाष् धातु के वर्तमान लट् के प्रथम पु० के बहुवचन रूप भाषन्ते से 'न्ते' निकालकर और मान जोड़कर भाषमाणः शब्द बना।

जिन धातुओं के लट् के बहुवचन रूप में 'न्ते' न हो जैसे कुर्वते में, तो 'ते' को हटाकर आन् जोड़ दें। इस प्रकार कृ धातु आत्मनेपदी से कुर्वाणः और दा धातु से ददानः बनेगा।

आस् धातु एक अपवाद है जिसमें शानच् लगाकर 'आसान्' नहीं, अपितु 'आसीन' शब्द बनता है।

षट्त्रिंशः दिवसः

तव्यत् और अनीयर प्रत्यय

'चाहिये' का भाव प्रकट करने के लिये धातुओं में तव्यत् और अनीयर प्रत्ययों को लगाकर शब्द बनाये जाते हैं जैसे—

कर्त्तव्य	करणीय
भोक्तव्य	भोजनीय
शोचितव्य	शोचनीय
पठितव्य	पठनीय
अर्चितव्य	अर्चनीय
द्रष्टव्य	दर्शनीय
ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
गन्तव्य	गमनीय
दातव्य	दानीय

ये शब्द दैनिक व्यवहार में बहुत उपयोगी हैं। इनका बनाना भी अतीव सरल है। तव्यत् और अनीयर् से बने शब्द सदा कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

बालकेन पुस्तकं पठितव्यम्।
गुरोः आज्ञा पालनीया।
समयेन कार्यं करणीयम्।

कुछ अन्य आवश्यक प्रत्ययों से परिचय

कृपया अधोलिखित शब्दों को देखें। क्या आप जानना चाहेंगे कि ये शब्द कैसे बने हैं।

विधिः निधिः आधिः व्याधिः वारिधिः समाधि। आदिः	ये सारे शब्द 'धा' धातु में 'कि' प्रत्यय लगाकर बने हैं। यह प्रत्यय उपसर्ग युक्त 'धा' धातु में लगाकर सदा पुल्लिग शब्द बनाता है। आ + दा धातु में लगकर 'कि' प्रत्यय एक पुल्लिग शब्द आदिः बनाता है।

यह ध्यातव्य है कि हिन्दी में विधि, निधि, व्याधि, समाधि आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं पर संस्कृत में ये सभी पुल्लिग शब्द है।

हारः रोगः पाकः भावः रामः	ये शब्द 'घञ्' प्रत्यय लगाकर बने हैं। घञ् प्रत्यय से बने शब्द सदा पुल्लिग होते हैं। घञ् का केवल अ शेष रहता है।
सुन्दरता दुर्बलता कृशता लघुता	ये शब्द 'तल्' प्रत्यय लगाकर बने हैं। तल् प्रत्यय विशेषण शब्दों में लगाकर भाव वाचक स्त्रीलिंग शब्द बनाता है।
सौन्दर्यम् माधुर्यम् दौर्बल्यम् कार्श्यम्	ये शब्द ष्यञ् प्रत्यय लगाकर बने हैं। ष्यञ् प्रत्यय भी विशेषण शब्द में लगाकर भाव वाचक शब्द बनाती है। सभी शब्द नपुं० लिंग होते हैं।
गतिः सम्पत्तिः बुद्धिः सृष्टिः	ये शब्द 'क्तिन्' प्रत्यय लगाकर बने हैं और सभी स्त्रीलिंग हैं। क्तिन् का केवल 'ति' शेष रहता है।
गमनम् भ्रमणम् शयनम् भोजनम भूषणम्	ये शब्द धातुओं में 'ल्युट्' प्रत्यय लगकर बने हैं। यह प्रत्यय नपुं० लिंग शब्द बनाता है।

सप्तत्रिंशः दिवसः

संख्या प्रकरण

एक	१	षड्विंशति	२६
द्वि	२	सप्तविंशति	२७
त्रि	३	अष्टाविंशति	२८
चतुर्	४	नवविंशति }	२९
पंचम्	५	एकोनत्रिंशत् }	
षष्	६	त्रिंशत्	३०
सप्तन्	७	चत्वारिंशत्	(४०)
अष्टन्	८	पंचाशत्	(५०)
नवन्	९	षष्टिः	(६०)
दशन्	१०	सप्ततिः	(७०)
एकादशन्	११	अशीतिः	(८०)
द्वादशन्	१२	नवतिः	(९०)
त्रयोदशन्	१३	शतम्	(१००)
चतुर्दशन्	१४	द्विशतम्	(२००)
पंचदशन्	१५	त्रिशतम्	(३००)
षोडषन्	१६	चतुश्शतम्	(४००)
सप्तदशन्	१७	पंचशतम्	(५००)
अष्टादशन्	१८	सहस्रम्	(१०००)
एकोनविंशत्	१९	अयुतम्	(१०,०००)
विंशति	२०	लक्ष	(१०,००,०००)
एकविंशति	२१	प्रयुतम्	मिलियन
द्वाविंशति	२२	कोटिः	करोम्
त्रयोविंशति	२३	अर्बुदम्	दस करोड़
चतुर्विंशति	२४	अब्जम्	अरब
पंचबिंशति	२५	खर्बः	खरब

संख्या वाचक शब्दों के रूप

[एक] एक शब्द के रूप सामान्यतः एकवचन में होते हैं।

	पुंल्लिग	नपुं० लिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वि०	एकम्	शेष पुं० की भाँति	एकाम्
तृ०	एकेन		एकया
च०	एकस्मै		एकस्यै
पं०	एकस्मात्		एकस्याः
ष०	एकस्य		एकस्याः
स०	एकस्मिन्		एकस्याम्

[द्वि] द्वि शब्द के रूप केवल द्विवचन में होते हैं।

	पुंल्लिग	नपुं० लिंग	स्त्रीलिंग
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	द्वाभ्याम्	शेष पुंल्लिगवत्	शेष पुंल्लिगवत्
च०	द्वाभ्याम्		
पं०	द्वाभ्याम्		
ष०	द्वयोः		
स०	द्वयोः		

[त्रि] त्रि शब्द के रूप केवल बहुवचन में होते हैं।

	पुं०	नपुं०	स्त्री०
प्र०	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वि०	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृ०	त्रिभिः	शेष पुंल्लिगवत्	तिसृभिः
च०	त्रिभ्यः		तिसृभ्यः
पं०	त्रिभ्यः		त्रिसृभ्यः
ष०	त्रयाणाम्		त्रिसृणाम्
स०	त्रिषु		त्रिसृषु

[चतुर्] चतुर् शब्द के रूप केवल बहुवचन में होते हैं।

प्र०	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वि०	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृ०	चतुर्भिः	शेष पुंल्लिगवत्	चतसृभिः
च०	चतुर्भ्यः		चतसृभ्यः
पं०	,,		चतसृभ्यः
ष०	चतुर्णाम्		चतसृणाम्
स०	चतुर्षु		चतसृषु

चार के अनन्तर संख्याओं के रूप पुंल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग सभी में समान होते हैं और केवल बहुवचन में होते हैं।

[पंचन्]	[षष्]	[सप्तन्]	[अष्टन्]	[नव]	[दश]
पंच	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
पंच	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
पंचभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
पंचभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पंचभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पंचानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
पंचसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

—

अष्टात्रिंशः दिवसः

स्मरणीयानि सुभाषितानि

एको देवः केशवो वा शिवो वा एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा।
एको वासः पत्तने वा वने वा एका नारी सुन्दरी वा दरी वा ॥

एकः स्वादु न भुंजीत एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात् ॥

द्वाविमौ कण्टकौ तीक्ष्णौ शरीरपरिशोषिणौ।
यश्चाधनः कामयते यश्च कुप्यत्यनीश्वरः ॥

द्वाविमौ पुरुषौ राजन् स्वर्गस्योपरि तिष्ठतः।
प्रभुश्च क्षमया युक्तो दरिद्रश्च प्रदानवान् ॥

द्वाविमौ पुरुषव्याघ्र! सूर्यमण्डलभेदिनौ।
परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ॥

हरणं च परस्वानां परदाराविमर्शनम्।
सुहृदश्च परित्यागः त्रयो दोषा क्षयावहाः ॥

वरप्रदानं राज्यं च पुत्रजन्म च भारत।
शत्रोश्च मोक्षणं कृच्छ्रात् त्रीणि चैकं च तत्समम् ॥

भक्तं च भजमानं च तवास्मीति च वादिनम्।
त्रीन् एतान् शरणं प्राप्तान् विषमेऽपि न संत्यजेत् ॥

चत्वारि राज्ञा तु महाबलेन वर्ज्यान्याहुः पण्डितस्तानि विद्यात्।
अल्पप्रज्ञैः सह मंत्रं न कुर्याद् न दीर्घसूत्रै रभसैश्चारणैश्च ॥

पञ्चाग्नयो मनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥

पञ्चैव पूजयंल्लोके यशः प्राप्नोति केवलम्।
देवान् पितॄन् मनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमान् ॥

पञ्चत्वानुगमिष्यन्ति यत्र यत्र गमिष्यसि।
मित्राण्यमित्रा मध्यस्था उपजीव्योपजीविनः।

माघमासे तु हे राजन् तकाराः पञ्च दुर्लभाः।
तरुणी तैलतूलं च ताम्बूलं तपसः सुखम् ॥

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधमालस्यं दीर्घसूत्रता ॥

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च ।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥

षडेते ह्यवमन्यन्ते नित्यं पूर्वोपकारिणम् ।
आचार्यं शिक्षिताः शिष्याः कृतदाराश्च मातरम् ॥

नारीं विगतकामाश्च कृतार्थाश्च प्रयोजकम् ।
नावं निस्तीर्णकान्तारा आतुराश्च चिकित्सकम् ॥

सप्त दोषाः सदा राज्ञा हातव्या व्यसनोदयाः ।
प्रायशो वै विनश्यन्ति कृतमूला अपीश्वराः ॥

स्त्रियोऽक्षा मृगया पानं वाक्पारुष्यं च पञ्चमम् ।
महच्च दण्डपारुष्यमर्थदूषणमेव च ॥

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च ।
पराक्रमश्चाबहु भाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥

नवद्वारमिदं वेश्म त्रिस्थूणं पञ्चसाक्षिकम् ।
क्षेत्रज्ञाधिष्ठितं विद्वान् यो वेद स परः कविः ॥

दश धर्मं न जानन्ति धृतराष्ट्र ! निबोध तान् ।
मत्तः प्रमत्त उन्मत्तः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः ॥

त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीतः कामी च ते दश ।
तस्मादेतेषु सर्वेषु न प्रसज्जेत पण्डितः ॥

मनो मधुकरो मेघो मानिनी मदनो मरुत् ।
मा मदो मर्कटो मत्स्यो मकारा दश चंचलाः ॥

शतं विहाय भोक्तव्यं सहस्रं स्नानमाचरेत् ।
लक्षं विहाय दातव्यं कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत् ॥

एकोनचत्वारिंशः दिवसः

शब्दों के वचन और लिंग के विषय में कुछ सामान्य ज्ञान

अंग्रेजी भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो सदा बहुवचन (Plural) में लिखे जाते हैं। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो एकवचन (Singuler) में प्रयुक्त होकर बहुवचन और एकवचन दोनों का बोध कराते हैं जैसे, Greetings, Regards, Seissors, Trousers, Arms, Felicitations, Tentacles, Misgivings, Credentials etc. संस्कृत में भी कुछ शब्द ऐसे हैं जो सदा बहुवचन में ही बोले और लिखे जाते हैं, यद्यपि आशय एकवचन ही होता है। जैसे—

१–दार स दारान् त्यक्त्वा वनं गतः।

२–अप् द्यौः भूमिरापोऽनलोऽनलश्च। न चैनं क्लेदयन्त्यापः।

३–प्राण रावणः प्राणान् अत्यजत्। सर्वस्य दयिताः प्राणाः, सर्वस्य दयिताः सुताः।

४–वसु नरो वसून् इच्छति।

५–प्रजा प्रजाः पालयति राजा।

६–सिकता

७–वर्षा

८–अक्षत

२. देशों और प्रान्तों के नाम संस्कृत में प्रायः बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

अहं गतः कलिंगान्।

चन्द्रगुप्तो मगधान् विजितवान्।

किन्तु यदि देश 'विषय' आदि शब्द देश, प्रान्त के नाम के साथ जुड़े हों तो एकवचन ही रखा जाता है। जैसे—

मगधदेशे पाटलिपुत्रं नामनगरम्।

३. कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग बहुवचन में होता है। उस समय व्यक्तिवाचक संज्ञा वंश या जाति को सूचित करती है, जैसे—
जनकानां रघूणां च संबंधः कस्य न प्रियः। (उत्तर रामचरित)
रघूणां अन्वयं वक्ष्ये। (रघुवंश)।

४. पात्रम्, आस्पदम्, स्थानम्, भाजनम्, पदम्, प्रमाणम् शब्द सदा एकवचन नपुं० लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं, चाहे वाक्य में कर्ता किसी लिंग और किसी भी वचन का हो। जैसे—

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु। संपदः पदमापदाम्।
त्वमसि भाजनं महसाम्। भवन्त एव प्रमाणम्।

चत्वारिंशः दिवसः

संस्कृत के प्रमुख साहित्यकारों का परिचय

नाम	प्रमुख कृति/कृतियाँ	अनुमानित काल
महर्षि वाल्मीकि	रामायणम्	त्रेता
महर्षि वेद व्यास	महाभारतम्, ब्रह्मसूत्राणि	द्वापर
पाणिनि	अष्टाध्यायी	ई०पू० पांचवी शती
पतञ्जलि	महाभाष्यम्, योगसूत्र	ई०पू० १५०
कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	ई०पू० चतुर्थ शती
अश्वघोष	बुद्धचरितम्, सौन्दरनन्दम्	ई० प्रथम शती
सातवाहन हाल	गाथासप्तशती	ई० द्वितीय शती
भास	स्वप्नवासवदत्तम् प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् प्रतिमानाटकम् अभिषेकनाटकम्	ई० तृतीय शती
कालिदास	रघुवंशम्, अभिज्ञान-शाकुन्तलम् कुमार-संभवम्, विक्रमोर्वशीयम् मेघदूतम्, मालविकाग्नि-मित्रम्, ऋतुसंहारम्	ई० चतुर्थ शती
शूद्रक	मृच्छकटिकनाटकम्	ई० पाँचवीं शती
हरिषेण	समुद्रगुप्त के शिलालेख	ई० पाँचवीं शती
विशाखदत्त	मुद्राराक्षसनाटकम्	ई० पाँचवीं शती
भारवि	किरातार्जुनीयम्	६०० ई० के पास
सुबन्धु	वासवदत्ता उपन्यास	ई० छठीं शती
भट्टि	भट्टिकाव्यम् (रावणवध)	ई० सातवीं शती पूर्वार्ध

हर्ष (महाराज हर्षवर्धन)	रत्नावली नाटिका प्रियदर्शिका नाटिका नागानन्दम्,	ई० सातवीं सती पूर्वार्द्ध
मयूर (मयूरभट्ट)	सूर्यशतकम्	" "
बाणभट्ट	कादम्बरी, हर्षचरितम् चण्डीशतकम्	ई० सातवीं शती
पुलिनभट्ट (बाणपुत्र)	कादम्बरी का उत्तरार्द्ध	ई० सातवीं शती
दण्डी	दशकुमारचरितम् उपन्यास	ई० सातवीं शती उत्तरार्द्ध
माघ	शिशुपालवधम्	" "
भट्टनारायण	वेणीसंहारनाटकम्	" "
कुमारिलभट्ट	श्लोकवार्तिक, तंत्रवार्तिक	" "
शङ्कराचार्य	ब्रह्मसूत्रभाष्यम्, गीता-भाष्यम्, उपनिषद्-भाष्यम्, शतशः स्तोत्र	ई० आठवीं शती
कुमारदास (सिंहलनरेश)	जानकीहरणम्	" "
भवभूति	उत्तररामचरितनाटकम् महावीरचरितनाटकम् मालतीमाधवनाटकम्	७०० ई० के निकट
अमरुक	अमरुकशतकम्	ई० आठवीं शती उत्तरार्द्ध
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोकः	ई० नवीं शती उत्तरार्द्ध
धनपाल	तिलकमंजरी उपन्यास	" "
राजशेखर	कर्पूरमंजरी	" "
बिल्हण (चोर कवि)	विक्रमांकदेवचरितम्, चौरपंचाशिका	ई० ११वीं शती पूर्वार्द्ध
क्षेमेन्द्र	रामायणमंजरी, भारतमंजरी, नर्ममाला, देशोपदेश, बृहत्कथा, दशावतार-चरितम्	" "

अभिनवगुप्त	अभिनवभारती, प्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी, तन्त्रालोकः (५० ग्रन्थ)	ई० ११वीं शती पूर्वार्द्ध
भोजराज	सरस्वतीकण्ठाभरणम्	,, ,,
आचार्य मम्मट	काव्यप्रकाश, शृंगारप्रकाश	,, ,,
लीलाशुक	कृष्णकर्णामृतम्	,, ,,
जयदेव	प्रबोधचन्द्रोदयनाटकम्, गीतगोविन्दम्	ई० १२वीं शती उत्तरार्द्ध
घोयी	पवनदूतम्	,, ,,
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	ई० १२वीं शती उत्तरार्द्ध
जयदेव	चन्द्रालोकः, प्रसन्नराघवनाटकम्	ई० १३वीं शती
आचार्य विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	ई० १४वीं शती पूर्वार्द्ध
पंडितराज जगन्नाथ [आंध्र प्र०]	रसगंगाधर, गंगालहरी, भामिनीविलासः	ई० १७वीं शती उत्तरार्द्ध

आधुनिक संस्कृत साहित्यकार १९वीं एवं २०वीं शती

१. पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी
२ स्वामी दयानन्द सरस्वती
३. हजारी प्रसाद द्विवेदी
४. भट्टनारायण शास्त्री
५. राधामंगल नारायण शास्त्री
६. एस० वी० बेलणकर
७. पी० के० नैयर
८. रामचन्द्राचार्य
९. महालिंग शास्त्री
१०. म० म० कृष्णमूर्ति शास्त्री
११. जानकीवल्लभ शास्त्री
१२. पं० मथुरानाथ शास्त्री
१३. पं० क्षमाराव
१४. एस० एन० ताडपचीकर
१५. डी० टी० ताताचार्य
१६. ऐत्रेय
१७. कृष्णराय
१८. पुलिन विहारी दास
१९ सी० आर० सहस्रबुद्धे
२०. शैल दीक्षितार
२१. राजराज वर्मा
२२. आर कृष्णमाचार्य
२३. सदाशिव डांगे
२४. वी० पी० कृष्ण नायर
२५. हरिचरण शास्त्री
२६. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
२७. आचार्य पट्टाभिराम शास्त्री
२८. पद्मभूषण पं० बलदेव उपाध्याय
२९. पं० गोपीनाथ कविराज
३० वी० राघवन
३१. मुंशीराम शर्मा सोम
३२. एस० बी० वर्णेकर
३३. विश्वनाथ सिंह जूदेव
३४. गोस्वामी हरिराय
३५ भानुदत्त
३६. गंगाधर रटाटे
३७ के० ए० एस० ऐय्यर
३८. प्रो० रामप्रसाद त्रिपाठी
३९. पं० करुणापति त्रिपाठी
४०. पं० वासुदेव द्विवेदी
४१. भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी
४२. पं० बाबूराम अवस्थी
४३. वीरभद्र मिश्र
४४ डॉ० सत्यव्रत सिंह
४५ प्रो० विद्यानिवास मिश्र
४६ बलभद्र प्रसाद शास्त्री
४७. डॉ० जगन्नाथ पाठक
४८. पं० भगवत शरण उपाध्याय
४९. पं० गयाचरण त्रिपाठी
५०. मोनियर विलियम्स
५१. वामन शिवराम आप्टे
५२. म० म० पं० दुर्गा प्रसाद द्विवेदी
५३. म० म० पं० मथुरा प्रसाद दीक्षित
५४. म०म०पं० नारायण शास्त्री खिस्ते
५५ बटुकनाथ शास्त्री
५६. श्रीनाथ हरसूकर
५७. डॉ० प्रकाशमित्र शास्त्री
५८. बालक राम द्विवेदी
५९. भोलाशंकर व्यास
६०. वाचस्पति गैरोला
६१. कपिलदेव द्विवेदी
६२. लोलिम्बराज
६३. आचार्य नवलकिशोर कांकर
६४. विष्णुदेव पंडित

६५. पं० अम्बिकादत्त व्यास (१९वीं शती के बाणभट्ट)	(१८५८–१९१०) ७५ ग्रंथ प्रमुख-शिवराजविजयम् गद्यकाव्य शिवविवाहः
६६. एम० एस० अणे (माधव श्री हरि अणे) पद्मभूषण (१८८०–१९६०)	तिलकयशोऽर्णवः बालगंगाधर तिलक का चरित्र, साहित्य एकेडमी पुरस्कार से पुरस्कृत
६७. कील हार्न (जर्मन) (१८४०–१९०८)	परिभाषेन्दुशेखर का अंग्रेजी अनुवाद
६८ मुख्य न्यायाधीश हेनरी ठामसकोल्बूक (ब्रिटिश) (१८६५-१९३७)	वेद, व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष पर अनेक लेख
६९ आर० एन० दांडेकर 'पद्मभूषण'	

परिशिष्ट

(i) धातुरूप—दसों गणों के प्रमुख एक-एक धातु के रूप लट् लोट्, विधिलिङ्, लङ् और लट् लकार में ।

(ii) शब्दरूप—प्रमुख पुंलिग, स्त्रीलिग और नपुंसक लिंगों के शब्द-रूप ।

'भ्वादिगण' (१)

पठ् धातु (परस्मैपदी)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथः
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु-पठतात्	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ, पठतात्	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

धातु	लोट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृट्
'गम्'	गच्छति	गच्छतु	गच्छेत्	अगच्छत्	गमिष्यति
'दृश्'	पश्यति	पश्यतु	पश्येत्	अपश्यत्	द्रक्ष्यति
'स्था'	तिष्ठति	तिष्ठतु	तिष्ठेत्	अतिष्ठत्	स्थास्यति
'पा'	पिबति	पिबतु	पिबेत्	अपिबत्	पास्यति
'भू'	भवति	भवतु	भवेत्	अभवत्	भविष्यति
'नी'	नयति	नयतु	नयेत्	अनयत्	नेष्यति
'घ्रा'	जिघ्रति	जिघ्रतु	जिघ्रेत्	अजिघ्रत्	घ्रास्यति

दिवादि गण परस्मैपदी

धातु	लट्	लट्	लिङ्	लङ्	लृट्
नृत्	नृत्यति	नृत्यतु	नृत्येत्	अनृत्यत्	नर्तिष्यति या नर्त्स्यति
नश्	नश्यति	नश्यतु	नश्येत्	अनश्यत्	नशिष्यति
भ्रम्	भ्राम्यति	भ्राम्यतु	भ्राम्येत्	अभ्रमत्	भ्रमिष्यति

आत्मनेपदी

'युध' 'जन्' धातु प्रथम पुरुष एक वचन में।

युध्	युध्यते	युध्यताम्	युध्येत	अयुध्यत	योत्स्यते
जन्	जायते	जायताम्	जायेत	अजायत	जनिष्यते

लभ् धातु (आत्मनेपदी)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	एकवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम ,,	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम ,,	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम ,,	लभस्व	लभेथाम	लभध्वम्
उत्तम ,,	लभै	लभावहै	लभामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम ,,	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम ,,	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम ,,	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम ,,	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट्

प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम ,,	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम ,,	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

'आत्मनेपदी' लभ सेव्, वृध, मुद, सह और याच् धातुयें प्रथम पुरुष एकवचन में।

धातु	लट्	लोट्	लिग	लड	लृड
'लभ'	लभते	लभताम्	लभेत	अलभत	लप्स्यते
'सेव'	सेवते	सेवताम्	सेवेत	असेवत	सेविष्यते
'वृध'	वर्धते	वर्धताम्	वर्धेत	अवर्धत	वर्धिष्यते
'मुद'	मोदते	मोदताम्	मोदेत	अमोदत	मोदिष्यते
'सह'	सहते	सहताम्	सहेत	असहत	सहिष्यते
'याच्'	याचते	याचताम्	याचेत	अयाचत	याचिष्यते

'उभयपदी' 'नी' और 'हृ' धातुयें प्रथम-पुरुष एकवचन में।

"नी"	नयति	नयतु	नयेत्	अनयत्	नेष्यति
	नयते	नयताम्	नयेत	अनयत	नेष्यते
'हृ'	हरति	हरतु	हरेत्	अहरत्	हरिष्यति
	हरते	हरताम्	हरेत	अहरत	हरिष्यते

(२) अदादिगण

अद् धातु (परस्मैपदी)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
मध्यम पुरुष	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उत्तम पुरुष	अद्मि	अद्वः	अद्मः

लोट्

प्रथम पुरुष	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
मध्यत पुरुष	अद्धि	अत्तम्	अत्त
उत्तम पुरुष	अदानि	अदाव	अदाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
मध्यम पुरुष	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
उत्तम पुरुष	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

लृट्

प्रथम पुरुष	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
मध्यम ,,	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
उत्तम ,,	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

अस् धातु (परस्मैदी)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम ,,	असि	स्थः	स्थ
उत्तम ,,	अस्मि	स्वः	स्मः

लोट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम ,,	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम ,,	असानि	असाव	असाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्मम ,,	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम ,,	स्याम्	स्याव	स्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम ,,	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट्

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम ,,	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम ,,	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

'ब्रू' धातु परस्मैपदी

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
मध्यम ,,	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
उत्तम ,,	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः

लोट्

प्रथस पुरुष	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु
मध्यम ,,	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत
उत्तम ,,	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रताम

लिङ्

प्रथम पुरुष	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः
मध्यम ,,	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात
उत्तम ,,	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम

लङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
मध्यम ,,	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उत्तम ,,	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

लृट्

प्रथम पुरुष	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
मध्यम ,,	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ
उत्तम ,,	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः

'रुद् धातु' परस्मैपदी

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
मध्यम ,,	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
उत्तम ,,	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लोट्

प्रथम पुरुष	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
मध्यम ,,	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
उत्तम ,,	रोदानि	रोदाव	रोदाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
मध्यम ,,	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
उत्तम ,,	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अरोदत् अरोदीत्	अरुदिताम्	अरुदन्
मध्यम ,,	अरोदः करोदीः	अरुदितम्	अरुदित
उत्तम ,,	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम

लृट्

प्रथम पुरुष	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
मध्यम ,,	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
उत्तम ,,	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः।

'स्वप' धातु परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
मध्यम ,,	स्वपिषि	स्विपिथः	स्वपिथ
उत्तम ,,	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

लोट्

प्रथम पुरुष	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
मध्यम ,,	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
उत्तम ,,	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
मध्यम ,,	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उत्तम ,,	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अस्वपीत्	अस्वपिताम्	अस्वपत्
मध्यम ,,	अस्वपीः	अस्वपितम्	अस्वपित
उत्तम ,,	अस्वपम	अस्वपिव	अस्वपिय

लृट्

प्रथम पुरुष	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
मध्यम ,,	स्वप्स्यसि	स्वत्स्यथः	स्वप्स्यथ
उत्तम ,,	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यवः	स्वप्स्यामः

'हन्' धातु परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यम ,,	हंसि	हथः	हथ
उत्तम ,,	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यम ,,	जहि	हतम्	हत
उत्तम ,,	हनानि	हनाव	हनाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यम ,,	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तम ,,	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम ,,	अहन्	अहतम्	शहत
उत्तम ,,	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट्

प्रथम पुरुष	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यम ,,	हनिष्यसि	हनिष्तथः	हनिष्यथ
उत्तम ,,	हनिष्यमि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

'इ धातु'

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एति	इतः	यन्ति
मध्यम ,,	एषि	इथः	इथ
उत्तम ,,	एमि	इवः	इमः

लोट्

प्रथम पुरुष	एतु	इताम्	यन्तु
मध्यम ,,	इहि	इतम्	इत
उत्तम ,,	अयानि	अयाव	अयाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	इयात्	इयाताम	इयुः
मध्यम ,,	इयाः	इयातम्	इयात
उत्तम ,,	इयाम्	इयाव	इयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐत्	ऐताम्	आयन्
मध्यम ,,	ऐः	ऐतम्	ऐत
उत्तम ,,	आयम्	ऐव	ऐम

लृट्

प्रथम पुरुष	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
मध्यम ,,	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ
उत्तम ,,	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः

'शी' धातु आत्मनेपदी (अदादिगण)

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शेते	शयाते	शेरते
मध्यम ,,	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उत्तम ,,	शये	शेवहे	शेमहे

लोट्

प्रथम पुरुष	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
मध्यम ,,	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उत्तम ,,	शयै	शयावहै	शयामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
मध्यम ,,	शदीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उत्तम ,,	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
मध्यम ,,	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
उत्तम ,,	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
मध्यम ,,	शयिष्यते	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उत्तम ,,	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

'आस्' धातु

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आस्ते	आसाते	आसते
मध्यम ,,	आस्से	आसाथे	आध्वे
उत्तम ,,	आसे	आस्वहे	आस्महे

लोट्

प्रथम पुरुष	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
मध्यम ,,	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम ,,	आसै	आसावेहे	आसायेहे

लिङ्

प्रथम पुरुष	आसीत्	आसीयाताम्	आसीरन्
मध्यम ,,	आसीथाः	आसीनाथम्	आसीध्वन्
उत्तम ,,	आसीय	आसीवहि	आसीमह

लङ्

प्रथम पुरुष	आस्त	आसाताम्	आसत
मध्यम ,,	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
उत्तम ,,	आसि	आस्वहि	आस्महि

लृट्

प्रथम पुरुष	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
मध्यम ,,	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उत्तम ,,	आसिष्ये	आसिष्यावे	आसिष्यामहे

(३) जुहोत्यादि गण परस्मैपदी

'हु' धातु

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
मध्यम ,,	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
उत्तम ,,	जुहोमि	जुहुवः	जुहुय।

लोट्

प्रथम पुरुष	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वन्तु
मध्यम ,,	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
उत्तय ,,	जुह्वानि	जुह्वाव	जुह्‌षाम्

लिङ्

प्रथम पुरुष	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
मध्यम ,,	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उत्तम ,,	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अजुहोत	अजुहुताम्	अजुहवुः
मध्यम ,,	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
उत्तम ,,	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुत्य

लृट्

प्रथम पुरुष	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति
मध्यम ,,	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ
उत्तम ,,	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः

'दा' धातु परस्मैपदी

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम ,,	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम ,,	ददामि	दद्वः	दद्मः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ददातु	दत्ताम्	ददतु
मध्यम ,,	देहि	दत्तम्	दत्त
उत्तम ,,	ददानि	ददाव	ददाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
मध्यम ,,	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
उत्तम ,,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
मध्यम ,,	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उत्तम ,,	अददाम्	अदद्व	अदद्म

लृट्

प्रथम पुरुष	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
मध्यम ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उत्तम ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

'दा' धातु आत्मनेपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दत्ते	ददाते	ददते
मध्यम ,,	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उत्तम ,,	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट्

प्रथम पुरुष	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
मध्यम ,,	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
उत्तम ,,	ददै	ददावहै	ददामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
मध्यम ,,	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उत्तम ,,	ददीय	ददीवहि	ददीयहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अदत्त	अददाताम्	अददत
मध्यम ,,	अदत्था:	अददाथाम्	अदध्वम्
उत्तम ,,	अददि	अदद्वहि	ददद्यहि

लट्

प्रथम पुरुष	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
मध्यम ,,	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उत्तम ,,	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

(४) दिवादिगण (परस्मैपदी)

(दिव धातु)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यत	दीव्यन्ति
मध्यम ,,	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उद्यम ,,	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लोट्

प्रथम पुरुष	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
मध्यम ,,	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उत्तम ,,	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

लिङ्

प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
मध्यम ,,	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उत्तम ,,	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लङ्

प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
मध्यम ,,	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उत्तम ,,	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
मध्यम ,,	देविष्यसि	देविष्यथ	देविष्यामः
उत्तम ,,	देविष्यामि	देविष्यवः	देविष्यामः

जुहोत्यादिगण

भी धातु (परस्मैपदी)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बिभेति	बिभीतः बिभितः	बिभ्यति
मध्यम पुरुष	बिभेषि	बिभीथः बिभिथः	बिभिथ, बिभीथ
उत्तम पुरुष	बिभेमि	बिभीवः बिभिवः	बिभीमः बिभिमः

लोट्

प्रथम पुरुष	बिभेतु विभितात्	बिभिताम् बिभीताम्	बिभ्यतु
मध्यम पुरुष	बिभिहि	बिभीतम् बिभितम्	बिभीत बिभित
उत्तम पुरुष	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
	बिभियात्	बिभियाताम्	बिभियुः
मध्यम पुरुष	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
	बिभियाः	बिभियातम्	बिभियात
उत्तम पुरुष	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम
	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
		अबिभिताम्	
मध्यम पुरुष	अबिभेः	अबिभितम्	अबिभित
		अबिभीतम्	अबिभीत
उत्तम पुरुष	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम
		अबिभिव	अबिभिम

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
मध्यम ,,	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ
उत्तम ,,	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

अदादिगण (परस्मैपदी)

'दुह धातु'

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति
मध्यम ,,	धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध
उत्तम ,,	दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः

लोट्

प्रथम पुरुष	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
मध्यम ,,	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
उत्तम ,,	दोहानि	दोहाव	दोहाम्

लिङ्

प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्यः
मध्यम ,,	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उत्तम ,,	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अधोक् (ग्)	अदुग्धाम्	अदुहन्
मध्यम ,,	अधोक् (ग्)	अदुग्धम्	अदुग्ध
उत्तम ,,	अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म

लृट्

प्रथम पुरुष	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
मध्यम ,,	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
उत्तम ,,	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

(५) स्वादिगण

शक् धातु

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम ,,	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम ,,	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लोट्

प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम ,,	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम ,,	शक्नुवानि	शक्नुवाव	शक्नुवाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम ,,	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम ,,	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम ,,	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम ,,	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट्

प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम ,,	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम ,,	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः

'सु' धातु परस्मैपदी

लट्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
मध्यम ,,	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उत्तम ,,	सुनोमि	सुनुवः सुन्वः	सुनुमः सुन्मः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
मध्यम ,,	सुनु	सुनुतम्	सुनुत
उत्तम ,,	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम्

लिङ्

प्रथम पुरुष	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः
मध्यम ,,	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात
उत्तम ,,	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
मध्यम ,,	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
उत्तम ,,	असुनवम्	असुनुव	असुनुम्
		असुन्व	असुन्म

लृट्

प्रथम पुरुष	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
मध्यम ,,	सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ
उत्तम ,,	सोष्यमि	सोष्यावः	सोष्यामः

'सु धातु' (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
मध्यम ,,	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
उत्तम ,,	सुन्वे	सुनुवहे	सुनुमहे

लोट्

प्रथम पुरुष	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
मध्यम ,,	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
उत्तम ,,	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
मध्यम ,,	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
उत्तम ,,	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
मध्यम ,,	असुनुथ	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
उत्तम ,,	असुन्वि	असुन्वहि	असुन्महि

लृट्

प्रथम पुरुष	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
मध्यम ,,	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उत्तम ,,	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

'आप्' (धातु) परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
मध्यम ,,	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
उत्तम ,,	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः

लोट्

प्रथम पुरुष	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
मध्यम ,,	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम ,,	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
मध्यम ,,	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
उत्तम ,,	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
मध्यम ,,	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
उत्तम ,,	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
मध्यम ,,	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उत्तम ,,	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

[६] तुदादिगण

'तुद् धातु' परस्मैपदो

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम ,,	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम ,,	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लोट्

प्रथम पुरुष	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
मध्यम ,,	तुद	तुदतम्	तुदत
उत्तम ,,	तुदानि	तुदाव	तुदाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
मध्यम ,,	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उत्तम ,,	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लङ्

प्रथम पुरुष	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
मध्यम ,,	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उत्तम ,,	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लृट्

प्रथम पुरुष	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
मध्यम ,,	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उत्तम ,,	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

तुद् धातु (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
मध्यम ,,	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
उत्तम ,,	तुदे	तुदावहे	तुदामहे

लोट्

प्रथस पुरुष	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
मध्यम ,,	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
उत्तम ,,	तुदै	तुदावहै	तुदामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
मध्यम ,,	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
उत्तम ,,	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
मध्यम ,,	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुध्वम्
उत्तम ,,	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि

लृट्

प्रमम पुरुष	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
मध्यम ,,	तोत्स्यसे	तोत्स्येथे	तोत्स्यध्वे
उत्तम ,,	तोत्स्ये	तोत्स्यावहे	तोत्स्यामहै

(७) रुधादिगण

भुज् धातु (परस्मैपदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति
मध्यम ,,	भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ
उत्तम ,,	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
मध्यम ,,	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त
उत्तम ,,	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः
मध्यम ,,	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात
उत्तम ,,	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अभुनक् (ग्)	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्
मध्यम ,,	अभुनक् (ग्)	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त
उत्तम ,,	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म

लृट्

प्रथम पुरुष	भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति
मध्यम ,,	भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ
उत्तम ,,	भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः

भुज् धातु (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
मध्यम ,,	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
उत्तम ,,	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लोट्

प्रथम पुरुष	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
मध्यम ,,	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
उत्तम ,,	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
मध्यम ,,	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
उत्तम ,,	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
मध्यम ,,	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
उत्तम ,,	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

लृट्

प्रथम पुरुष	भोक्ष्यते	भोक्ष्ययेते	भोक्ष्यन्ते
मध्यम ,,	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भौक्ष्यध्वे
उत्तम ,,	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

[८] तनादिगण

'तन्' धातु (परस्मैपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथग पुरुष	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
मध्यम ,,	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उत्तम ,,	तनोमि	तनुवः तन्वः	तनुमः तन्मः

लोट्

प्रथम पुरुष	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु
मध्यम ,,	तनु	तनुतम्	तनुत
उत्तम ,,	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
मध्यम ,,	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उत्तम ,,	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
मध्नम ,,	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उत्तम ,,	अतनवम्	अतनुव	अतनुम

लृट्

प्रथम पुरुष	तनिष्यति	तनिष्यतः	तविष्यन्ति
मध्यम ,,	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ
उत्तम ,,	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः

'तन' धातु (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनुते	तन्वाते	तन्वते
मध्यम ,,	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
उत्तम ,,	वन्वे	तनुवहे तन्वहे	तनुमहे तन्महे

लोट्

प्रथम पुरुष	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
मध्यम ,,	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
उत्तम ,,	ववबै	तववावहै	तववामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
मध्यम ,,	तम्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
उत्तम ,,	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
मध्यम ,,	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उत्तम ,,	अतन्वि	अतनुवहि- अतन्वहि	अतनुमहि- अतन्महि

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
मध्यम ,,	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उत्तम ,,	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

'कृ' धातु (परस्मैपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम ,,	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम ,,	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट्

प्रथम पुरुष	करोतु कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम ,,	कुरु ,,	कुरुतम्	कुरुतम्
उत्तम ,,	करवाणि	करवाव	करवाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम ,,	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम ,,	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ्

प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम ,,	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम ,,	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट्

प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यति
मध्यम ,,	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम ,,	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

'कृ' धातु (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम ,,	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम ,,	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट्

प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम ,,	कुरुष्व	कुर्व्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम ,,	करवै	करवावहै	करवामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम ,,	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम ,,	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम ,,	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम ,,	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लृट्

प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम ,,	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम ,,	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

(९) क्र्यादिगण

'क्री' धातु (परस्मैपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
मध्यम ,,	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उत्तम ,,	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः।

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
मध्यम ,,	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उत्तम ,,	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
मध्यम ,,	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उत्तम ,,	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
मध्यम ,,	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उत्तम ,,	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

लृट्

प्रथम पुरुष	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
मध्यम ,,	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उत्तम ,,	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

'क्री' धातु (आत्मने०)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
मध्यम ,,	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उत्तम ,,	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट्

प्रथम पुरुष	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
मध्यम ,,	क्रीणीष्व	क्रीणीथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम ,,	क्रीणै	क्रीणावहे	क्रीणामहे

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम ,,	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम ,,	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
मध्यम ,,	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उत्तम ,,	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लृट्

प्रथम पुरुष	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
मध्यम ,,	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उत्तम ,,	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

'ग्रह' धातु परस्मैपदी

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
मध्यम ,,	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उत्तम ,,	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लोट्

प्रथम पुरुष	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
मध्यम ,,	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उत्तम ,,	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
मध्यम ,,	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उत्तम ,,	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
मध्यम ,,	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उत्तम ,,	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

लृट्

प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
मध्यम ,,	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उत्तम ,,	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

'ग्रह' धातु (आत्मने०)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
मध्यम ,,	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उत्तय ,,	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट्

प्रथम पुरुष	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
मध्यम ,,	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम ,,	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लिङ्

प्रथम पुरुष	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
मध्यम ,,	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उत्तम ,,	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

लङ्

प्रथम पुरुष	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
मध्यम ,,	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उत्तम ,,	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
मध्यम ,,	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उत्तम ,,	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

'ज्ञा' धातु (परस्मैपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानाति	जानीतः	जानन्ति
मध्यम ,,	जानासि	जानीथः	जानीथ
उत्तम ,,	जानामि	जानीवः	जानीमः

लोट्

प्रथम पुरुष	जानातु	जानीताम्	जानन्तु
मध्यम ,,	जानीहि	जानीतम्	जानीत
उत्तम ,,	जानानि	जानाव	जानाम

लिङ्

प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम ,,	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उत्तम ,,	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

लङ्

प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम ,,	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम ,,	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लृट्

प्रथम पुरुष	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
मध्यम ,,	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उत्तम ,,	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

'ज्ञा' धातु (आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीते	जानाते	जानते
मध्यम ,,	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उत्तम ,,	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
मध्यम ,,	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम ,,	जानै	जानावहै	जानामहै

लिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम ,,	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम ,,	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानात	अजानाताम्	अजानत
मध्यम ,,	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम ,,	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
मध्यम ,,	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उत्तम ,,	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

(१०) चुरादिगण

(उभयपदी)

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लिङ्	लृट्
चुर् (परस्मै०)	चोरयति	चोरयतु	चोरयेत्	अचोरयत्	चोरयिष्यति
(आत्मनेपदी)	चोरयते	चोरयताम्	चोरयेत	अचोरयत	चोरयिष्यते
(चिन्तपरस्मै०)	चिन्तयति	चिन्तयतु	चिन्तयेत्	अचिन्तयत्	चिन्तयिष्यति
(आत्मनेपदी)	चिन्तयते	चिन्तयताम्	चिन्तयेत्	अचिन्तयत	चिन्तयिष्यति
कथ् (परस्मै०)	कथयति	कथयतु	कथयेत्	अकथयत्	कथयिष्यति
(आत्मनेपदी)	कथयते	कथयताम्	कथयेत	अकथयत	कथयिष्यते
भक्ष् (परस्मै०)	भक्षयति	भक्षयतु	भक्षयेत्	अभक्षयत्	भक्षयिष्यति
(आत्मनेपदी)	भक्षयते	भक्षयताम्	भक्षयेत	अभक्षयत	भक्षष्यियते

'परस्मैपदी' (तुदादिगण)

इष्	इच्छति	इच्छतु	इच्छेत्	ऐच्छत्	एषिष्यति
स्पृश्	स्पृशति	स्पृशतु	स्पृशेत्	अस्पृशत्	स्प्रक्ष्यति
पृच्छ्	पृच्छति	पृच्छतु	पृच्छेत्	अपृच्छत्	प्रक्ष्यति

(आत्मनेपदी)

मृ	म्रियते	म्रियताम्	म्रियेत	अम्रियत	मरिष्यते
मुच्	मुञ्चते	मुञ्चताम्	मुञ्चेत	अमुञ्चत	मोक्ष्यते
मुच्-परस्मै.	मुञ्चति	मुञ्चतु	मुञ्चेत्	अमुञ्चत्	मोक्ष्यति

अकारान्त पुंल्लिग शब्द (राम)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रामः	रामौ	रामाः
रामम्	रामौ	रामान्
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
रामे	रामयोः	रामेषु
हे राम	हे रामौ	हे रामाः

आकारान्त स्त्रीलिंग (लता)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लता	लते	लताः
लताम्	लते	लताः
लतया	लताभ्याम्	लताभिः
लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
लतायाः	लतयोः	लतानाम्
लतायाम्	लतयोः	लतासु
हे लते	हे लते	हे लताः

अकारान्त नपुंसकलिंग (गृह)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गृहम्	गृहे	गृहाणि
गृहम्	गृहे	गृहाणि
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
गृहे	गृहयोः	गृहेषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि

नकारान्त नपुंसकलिंग (   )

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नाम	नामनी	नामानि
नाम	,,	नामानि
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
नाम्ने	,,	नामभ्यः
नाम्नः	,,	नामभ्यः
नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
नाम्नि नामनि	,,	नामसु
हे नाम, नामन्	हे नामनी	हे नामानि

इकारान्त पुंल्लिग शब्द (हरि)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हरिः	हरी	हरयः
हरिम्	हरी	हरीन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
हरेः	हर्योः	हरीणाम्
हरौ	हर्योः	हरिषु
हे हरे	हे हरी	हे हरयः

इकारान्त स्त्रीलिंग (मति)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मतिः	मती	मतयः
मतिम्	मती	मतीः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
हे मते	हे मती	हे मतयः

ईकारान्त स्त्रीलिंग (नदी)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नदी	नद्यौ	नद्यः
नदीम्	नद्यौ	नदीः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
नद्याम्	नद्योः	नदीषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इकारान्त नपुंसकल्लिग (वारि)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वारि	वारिणी	वारीणि
वारि	वारिणी	वारीणि
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
वारिणि	वारिणोः	वारिषु
हे वारे, हे वारि	हे वारिणी	हे वारीणि

उकारान्त पुंल्लिग शब्द (गुरु)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गुरुः	गुरू	गुरवः
गुरुम्	गुरू	गुरून्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

उकारान्त नपुंसकल्लिग (मधु)

एकवचन	द्विवचन	बहुवकन
मधु	मधुनी	मधूनि
मधु	मधुनी	मधूनि
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
मधुनि	मधुनोः	मधुषु
हे मधु, हे मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

उकारान्त स्त्रीलिंग (धेनु)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
धेनुः	धेनू	धेनवः
धेनुम्	धेनू	धेनूः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
धेन्वाः धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
धेन्वाम्; धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

ऊकारान्तर स्त्रीलिंग (वधू)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वधू	वध्वौ	वध्वः
वधूम्	वध्वौ	वधूः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

अस्मद्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम्	आवाम्	वयम्
माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
मम, मे	आवयोः नौ	अस्माकम्, नः
मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तत् पुंल्लिंग

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सः	तौ	ते
तम्	तौ	तान्
तेन	ताभ्याम्	तैः
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्य	तयोः	तेषाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् स्त्रीलिंग

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सा	ते	ताः
ताम्	ते	ताः
तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्याः	तयोः	तासाम्
तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् (पुंल्लिग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
एष:	एतौ	एते
एतम्-एनम्	एतौ-एनौ	एतान्-एनान्
एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतै:
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्य:
एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्य:
एतस्य	एतयो:-एनयो:	एतेषाम्
एतस्मिन्	एतयो: एनयो:	एतेषु

एतद् (स्त्रीलिंग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
एषा	एते	एता।
एताम्-एनाम्	एते-एने	एता:-एना:
एतया-एनया	एताभ्याम्	एताभि:
एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्य:
एतस्या:	एताभ्याम्	एताभ्य:
एतस्या:	एतयो: एनयो:	एतासाम्
एतस्याम्	एतयो: एनयो:	एतासु

इदम् (पुंल्लिग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचव
अयम्	इमौ	इमे
इमम्	इमौ	इमान्
अनेन	आभ्याम्	एभि:
अस्मै	आभ्याम्	एभ्य:
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्य:
अस्य	अनयो:	एषाम्
अस्मिन्	अनयो:	एषु

इदम् (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
इयम्	इमे	इमाः
इमाम्	इमे	इमाः
अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अस्याः	अनयोः	आसाम्
अस्याम्	अनयोः	आसु

यद् (पुंल्लिङ्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
यः	यौ	ये
यम्	यौ	यान्
येन	याभ्याम्	यैः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
यस्य	ययोः	येषाम्
यस्मिन्	ययोः	येषु

यद् (स्त्रीलिङ्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
या	ये	याः
याम्	ये	याः
यया	याभ्याम्	याभिः
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
यस्याः	ययोः	यासाम्
यस्याम्	ययोः	यासु

किम् (पुं०)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कः	कौ	के
कम्	कौ	कान्
केन	काभ्याम्	कैः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
कस्य	कयोः	केषाम्
कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (स्त्री०)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
का	के	काः
काम्	के	काः
कया	काभ्याम्	काभिः
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
कस्याः	कयोः	कासाम्
कस्याम्	कयोः	कासु

पुं० एकशब्द रूप	स्त्री० एक शब्द रूप	न० एकशब्द रूप
एकः	एका	एकम्
एकम्	एकाम्	एकम्
एकेन	एकया	एकेन
एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
एकस्य	एकस्याः	एकस्य
एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

पुं० द्विशब्द रूप	स्त्री० द्विशब्द रूप	न० द्विशब्द रूप
—	द्वे	—
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वौ	द्वाभ्याम्	द्वे
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
द्वाभ्यम्	द्वयोः	द्वाभ्याम्
द्वयोः	—	द्वयोः
द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

पुं० त्रि-तीन शब्द रूप

बहुबचन	
त्रयः	
त्रीन्	
त्रिभिः	
त्रिभ्यः	
त्रिभ्यः	नपुं०
त्रयाणाम्	त्रीणि
त्रिषु	त्रीणि
	शेष पुंलिग के समान

स्त्री० त्रि-तीन शब्द रूप

बहुवचन	
तिस्रः	
तिस्रः	नपुं०
तिसृभिः	त्रीणि
तिसृभ्यः	त्रीणि
तिसृभ्यः	शेष पुंलिग के समान
तिसृणाम्	
त्रिसृषु	

चतुर् (चार, पुं०) बहुवचन

प्र०	चत्वारः	
द्वि०	चतुरः	नपुं०
तृ०	चतुर्भिः	प्र० चत्वारि
च०	चतुर्भ्यः	शेष पुंलिंग के समान
पं०	चतुर्भ्यः	
ष०	चतुर्णाम्	
स०	चतुर्षु	

स्त्री०	पञ्चन् (पाँच)
चतस्रः	पञ्च
चतस्रः	पञ्च
चतसृभिः	पञ्चभिः
चतसृभ्यः	पञ्चभ्यः
चतसृभ्यः	पञ्चभ्यः
चतसृणाम्	पञ्चानाम्
चतसृषु	पञ्चसु


संस्कृत भवन
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु नूतने वत्सरे शुभे।।